Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 7

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

18 जमादी सानी 1441 हिजरी कमरी 13 सुलह 1399 हिजरी शमसी 13 फरवरी 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

पेशगोई मुस्लेह मौऊद

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"بِاِلْهَامِ اللّٰهِ تَعَالٰى وَاِعْلَامِهٖ عَزَّوَجَلَّ

रहीम करीम तथा सम्मान्नीय ख़ुदा ने जो प्रत्येक चीज़ पर क़ादिर है(جَلَّ شَانُهٗ وَعَزَّ اِسْمُهٗ)मुझ को अपने इल्हाम से सम्बोधित करके फरमाया कि मैं तुझे एक रहमत (कृपा) का निशान देता हूँ उसी के अनुसार जो तूने मुझ से मांगा। अत: मैंने तेरी वेदनाओं को सुना और तेरी दुआओं को अपनी रहमत से क़बूलियत (मंज़ूरी) की जगह दी और तेरे सफ़र को (जो होशियारपुर और लुधियाना का सफ़र है) तेरे लिये मुबारक कर दिया। अत: क़ुदरत (शक्ति) और रहमत (कृपा) और क़ुर्बत (निकटता) का निशान तुझे दिया जाता है। फ़ज़ल और एहसान (कृपा व उपकार) का निशान तुझे प्रदान किया जाता है और फ़तह और ज़फ़र (सफलता और विजय) की कुंजी तुझे मिलती है। हे मुज़फ्फ़र (विजेता) ! तुझ पर सलाम। ख़ुदा ने यह कहा ताकि वे जो क़बरों में दबे पड़े हैं, बाहर आयें और इस्लाम धर्म की प्रतिष्ठा और कलामुल्लाह (क़ुर्आन) की श्रेष्ठता लोगों पर प्रकट हो और ताकि सत्य अपनी पूरी बर्कतों के साथ आ जाए और बातिल (झूठ) अपनी पूरी बुराईयों के साथ भाग जाये और लोग समझें कि मैं क़ादिर (सामर्थ्यवान) हूँ, जो चाहता हूँ करता हूँ। अत: वे विश्वास कर लें कि मैं तेरे साथ हूँ और उन्हें जो ख़ुदा के वजूद पर ईमान नहीं लाते और ख़ुदा और ख़ुदा के धर्म और उसकी किताब और उसके पवित्र रसूल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इन्कार और तकज़ीब (विरोध और झूठ) की दृष्टि से देखते हैं, एक खुली निशानी मिले और मुजरिमों की राह प्रकट हो जाये। अत: तुझे खुशख़बरी हो कि एक वजीह (प्रतापी) और पवित्र लड़का तुझे दिया जाएगा। एक ज़की ग़ुलाम (पवित्र लड़का) तुझे मिलेगा। वह लड़का तेरे ही बीज से तेरी ही सन्तान व कुल का होगा। सुन्दर, पवित्र लड़का, तुम्हारा मेहमान आता है उसका नाम अन्मवाईल और बशीर भी है। उसको मुकद्दस रूह (पवित्र आत्मा) दी गई है और वह अशुद्धता से पवित्र है। वह अल्लाह का नूर (प्रकाश) है। मुबारक वह जो आसमान से आता है। उसके साथ फ़ज़ल है, जो उसके आने के साथ आयेगा। वह साहिबे शिकोह (प्रतापी) और अज़मत (महान) और दौलत (धनी) होगा। वह दुनिया में आयेगा और अपने मसीही नफ़स अर्थात् (मसीही शक्ति) और रूहुल हक़ की बर्कत से बहुतों को बीमारियों से साफ़ करेगा। वह कलिमतुल्लाह (अर्थात एकेश्वरवाद का प्रतीक) है। क्योंकि ख़ुदा की रहमत (कृपा) व ग़य्यूरी (स्वाभिमान) ने उसे अपने कलिमा तम्जीद (बुज़ुर्गी व शान) से भेजा है। वह सख़्त ज़हीन व फ़हीम (बुद्धिमान एवं सूझवान) होगा और दिल का हलीम (शांत स्वभाव) और उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी (अर्थात् सांसारिक तथा आध्यात्मिक ज्ञान) से पुर किया जायेगा। वह तीन को चार करने वाला होगा।.....दुशंब: (सोमवार) है मुबारक दुशन्ब: (अर्थात् सोमवार) फ़र्ज़न्द दिल बंद गिरामी अर्जुमन्द (सम्मान जनक, मनमोहक, श्रेष्ठ सुपुत्र)مَظْهَرُ الْاَوَّلِ وَالْاٰخِرِ مَظْهَرُ الْحَقِّ وَالْعُلَاءِ كَاَنَّ اللّٰهَ نَزَلَ مِنَ السَّمَاءِ मज़हरूल् अव्वले वल् आख़िरि, मज़हरूल् हक्क़े वल् अलाए कअन्नल्लाह नज़ल मिनस्समाअ। अर्थात् वह उस ख़ुदा का प्रकाश है जो हमेशा से है और सदैव रहने वाला है वह उस ख़ुदा का प्रकाश है जो सच है और महान है (उसका आना ऐसा ही है) जैसा कि अल्लाह स्वंय आकाश से उतर आया हो। जिसका आना बहुत मुबारक और ख़ुदा के प्रताप के प्रकट होने का कारण होगा। नूर आता है नूर, जिसको ख़ुदा ने अपनी इच्छा के इत्र से सुगंधित किया है। हम उसमें अपनी रूह डालेंगे। ख़ुदा का साया उसके सिर पर होगा। वह अतिशीघ्र बढ़ेगा और असीरों (गुलामों) की रुस्तगारी (मुक्ति) का कारण होगा और ज़मीन के किनारों तक शोहरत (प्रसिद्धि) पाएगा और क़ौमें (जातियां) उससे बरकत पाऐंगी। तब अपने नफ़सी नुक़ता आसमान अर्थात् ख़ुदा की तरफ उठाया जायेगा। व काना अमरन मक़्ज़िय्या (और यह काम पूरा होकर रहने वाला है)।"

(इश्तिहार 20 फरवरी 1886 ई तब्लीग़ रिसालत भाग 1 पृष्ठ 58 से 60 मजमूआ इश्तिहारात भाग 1 पृष्ठ 100)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर जर्मनी, जुलाई 2018 ई (भाग-2)

मुआइना इंतिज़ाम जलसा सालाना,जमाअत अहमदिया जर्मनी के 44 वें जलसा सालाना का पहला दिन। * ध्वजारोहण का आयोजन। * ख़ुत्बा जुम्अः से जलसा की का आरम्भ प्रेस कान्फ्रैंस। * सेनेगाल , माईवट आईलैंड और लिथोनिया से आने वाले वफ़ूद की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात और उनके ईमान वर्धक प्रतिक्रियाएं हमारा जलसा हमारी जमाअत के मैंबरों के लिए है, इस का मक़सद यह है कि अहमदी रुहानी तौर पर तरक़्क़ी करें, अपने आचरण बेहतर करें और ख़ुदा तआला के अधिकार और बन्दों को हुकूक को समझें कि किस तरह से हम ये अधिकार बेहतरीन रंग में अदा कर सकते हैं * अगर आप इस्लाम के बारे में हमारे दृष्टकिोण को देखें तो फिर किसी किस्म का इस्लामोफोबिया पैदा नहीं होना चाहिए * हम एक मज़हबी जमाअत हैं और हमने मज़हबी शिक्षाओं पर अनुकरण करना है , हम ने अपनी मुक़द्दस किताब की पैरवी करनी है जो कि क़ुरआन करीम है, हम ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत और बातों की पैरवी करनी है , और अगर आप पैरवी नहीं करते तो इस का अर्थ है कि आप बुनियादी शिक्षाओं से मुंह फेर रहे हैं।

हुज़ूर अनवर की प्रैस कान्फ्रैंस और पत्रकारों के सवालों के जवाब

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

मुआइना इंतिज़ाम जलसा सालाना

लगभग 8 बजे जलसा सालाना के इंतिज़ामों का मुआइना शुरू हुआ। नायब आफ़िसरों जलसा सालाना जिनकी संख्या 14 है एक क़तार में खड़े थे। हुज़ूर अनवर ने उनके पास से गुज़रते हुए अपना हाथ बुलंद कर के सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और फ़रमाया "अच्छा ये नायब आफ़िसरान हैं।"

जमाअत हिमबर्ग से 7 ख़ुद्दाम और 4 इतफ़ाल 680 किलोमीटर का सफ़र पाँच दिनों में साईकलों पर तय कर के जलसा गाह पहुंचे थे। ये सब एक तरफ़ खड़े थे। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए उनके पास तशरीफ़ ले गए और उन्होंने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में निवेदन किया कि हम 680 किलो मीटर का सफ़र तय कर के आज ही पहुंचे हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया" माशा अल्लाह 680 किलोमीटर का सफ़र तय किया है।"

इस के बाद सबसे पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने विभाग रजिस्ट्रेशन और कार्ड स्कैनिंग सिस्टम का मुआइना फ़रमाया

मर्दाना जलसा गाह के साथ एक खुले क्षेत्र में एक बड़ी मार्की लगाई गई है। जिन लोगों को हाल में जगह ना मिल सके वे इस मार्की मैं बैठेंगे और यहां बाक़ायदा सफ़ों के लिए लाइनें लगा कर नमाज़ का प्रबन्ध किया गया है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने इस मार्की के बारे में पूछा।

इसके बाद हुज़ूर अनवर ने इस स्टोर का मुआइना फ़रमाया जहां खाने पीने और इस्तिमाल की विभिन्न चीज़े स्टोर की गई हैं। यहां से ज़रूरत के अनुसार साथ साथ ये चीढ़ें विभिन्न विभागों को उपलब्ध की जाती हैं।

इस स्टोर के सामने एक दूसरे हिस्सा में विभिन्न देशों से आने वाले ग़ैर मुल्की मेहमानों के लिए खाना खाने का प्रबन्ध किया गया है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने इस हिस्सा को भी देखा और प्रबन्ध के बारे में पूछा।

इसके बाद हुज़ूर अनवर ने लंगर ख़ाना का मुआइना फ़रमाया। सबसे पहले हुज़ूर अनवर ने गोश्त की कटाई का जायज़ा लिया और मुंतज़मीन से इस बारे में बातचीत फ़रमाई। इस गोश्त को एक मुईन टैमप्रेचर पर महफ़ूज़ करने के लिए एक कंटेनर जैसा फ़्रीज़र प्राप्त किया गया है जिसमें टनों के हिसाब से गोश्त रखा जा सकता है।

इस के बाद हुज़ूर अनवर ने लंगर ख़ाना का मुआइना फ़रमाया और खाना पकाने के इंतिज़ामात का जायज़ा लिया और खाने का स्तर देखा।

विभिन्न अक़्वाम से सम्बन्ध रखने वाले मेहमानों के लिए उनकी ज़रूरत और मिज़ाज के अनुसार अलग खाना तय्यार किया गया था। हुज़ूर अनवर ने इस का भी जायज़ा लिया। जलसा सालाना पर आने वाले हज़ारों मेहमानों के लिए आज आलू गोश्त और दाल का सालन तय्यार किया गया था और साथ वे नान भी रखे गए थे जो मेहमानों को दिए गए थे।

हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए आलू गोश्त और दाल से कुछ लुक़्मे खाए और इस बात का जायज़ा लिया कि दोनों सालन सही पके हुए हैं या उनमें कोई कमी रह गई है। हुज़ूर अनवर ने खाने के स्तर के बारे में मुंतज़मीन से बातचीत फ़रमाई

लंगर ख़ाना के कारकुनान ने एक बड़े साइज़ का केक तय्यार किया हुआ था। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए अपने इन ख़ुद्दाम के लिए केक के विभिन्न हिस्से किए और एक टुकड़ा खाया।

लंगर ख़ाना के बाहर "देग वाशिंग मशीन" लगाई गई थी। यह मशीन पिछले ग्यारह बारह सालों से लगाई जा रही है और हर साल इस में मज़ीद बेहतरी लाई जा रही है। यह मशीन अहमदी इंजीनीयर्ज़ ने मिलकर ख़ुद तय्यार की है। आरम्भ में यह अवस्था थी कि मशीन पर देग रखने के बाद एक बटन दबाना पड़ता था। लेकिन पिछले एक दो सालों में इस में बेहतरी लाई गई है। अब ये बटन नहीं दबाना पड़ता बल्कि जैसे देग सफ़ाई के लिए रखी जाती है अपने आप फंक्शन शुरू हो जाता है और देग धुलने का पकाम मुकम्मल होने के बाद अपने आप बाहर आ जाती है।

इस मशीन के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अमीर साहिब से बातचीत फ़रमाई। इस के बाद लंगर ख़ाना के कारकुनों ने अपने प्यारे आक़ा के साथ ग्रुप फ़ोटो बनवाने का सौभाग्य पाया।

लंगर ख़ाना के क़रीब ही खाना खाने के लिए दो बड़ी वसीअ मार्कीज़ लगाई गई थीं। क़रीब ही चाय का स्टॉल भी था। हुज़ूर अनवर ने इन इंतिज़ामों को देखा और इस बारे में अफ़्सर साहिब जलसा सालाना से कुछ मामलों पर सवाल पूछे।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ प्राईवेट ख़ेमों के एरिया में तशरीफ़ ले आए और ख़ेमों के बीच रास्ता से गुज़रे। रास्ता के दोनों अतराफ़ जर्मनी की विभिन्न जमाअतों और इलाक़ों से आने वाली फ़ैमिलीयाँ अपने अपने ख़ेमों के पास खड़ी थीं। ये सभी लोग अपने हाथ बुलंद कर के हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में सलाम निवेदन करते। हुज़ूर दया करते हुए अपना हाथ बुलंद कर के उनके सलाम का जवाब देते और कुछ से हुज़ूर अनवर ने उनके ख़ेमों के बारे में से बातचीत भी फ़रमाई। विभिन्न अतराफ़ से लोग निरन्तर नारे बुलंद कर रहे थे।

हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए एक ख़ेमा के क़रीब जा कर उस का मुआइना फ़रमाया और इस ख़ेमा में ठहरने वाली फ़ैमिली से बातचीत फ़रमाई और यह भी पूछा कि कितने लोग इस ख़ेमा में निवास कर सकते हैं और इस ख़ेमा में दाख़िल

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

हे अन्सार के गिरोह !क्या तुम इस बात पर ख़ुश नहीं कि लोग भीड़ बकरियां और ऊंट लेकर जाएं और तुम रसूलुल्लाह को लेकर अपने घरों में लौटो।

इस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जान है अगर हिज्रत ना होती तो मैं अन्सार में से एक शख़्स होता

अगर लोग एक वादी में चल रहे हों और अन्सार दूसरी वादी में चल रहे हों तो मैं अन्सार की वादी को इख़तियार करूँगा

हे अल्लाह अन्सार पर रहम फ़र्मा और अन्सार के बेटों पर और अन्सार के बेटों के बेटों पर

इख़लास तथा वफ़ा के पैकर बदरी सहाबी हज़रत सअद बिन उबादा रज़ी अल्लाह अन्हो की मुबारक सीरत का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 10 जनवरी 2020 ई. स्थान - मस्जिद 'बैयतुल फुतूह मोर्डन सिर्रे (यू. के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछ्ले ख़ुत्बा जुम्अः में वक़्फ़ जदीद के नए साल के ऐलान के साथ जो मैंने देशों की जमअतों की पोज़ीशन बताई थी इस में बताया था कि यूके की जमाअतों में वक़्फ़ जदीद के चंदे की वसूली के लिहाज़ से इस्लामाबाद की जमाअत पहले नम्बर पर है लेकिन बाद में ये बात सामने आई कि वह जायज़ा ग़लत था। पहला नम्बर आलडरशाट (Aldershot)की जमाअत है और दूसरे नम्बर पर इस्लामाबाद की जमअत। क्यों हुआ ?किस तरह हुआ? इस की तफ़सील में मैं नहीं जाना चाहता लेकिन बहरहाल ये दुरुस्ती की ज़रूरत थी। इसलिए मैंने सबसे पहले उसी को लिया

आलडरशाट की जमाअत माशा अल्लाह बड़ी क़ुर्बानी दे रही है और खासतौर पर लज्ना आलडरशाट की सदर ने मुझे लिखा था किस तरह कई औरतों ने ग़ैरमामूली क़ुर्बानी दी है। उनका जज़्बा क़ुर्बानी मिसाली है। अल्लाह तआला उनके मालों तथा नफ्सों में बरकत अता फ़रमाए। मैंने पिछले ख़ुत्बे में उमूमन ग़रीबों की और ग़रीब देशों में रहने वालों की क़ुर्बानी की घटनाएं इसलिए बयान किए थे कि अमीरों में भी यह एहसास पैदा हो और वे भी क़ुर्बानी की रूह को समझें वर्ना अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इन तरक़्क़ी वाले देशों में बहुत से ऐसे लोग हैं जो दुनियावी ज़रूरीयात को पीछे डाल कर क़ुर्बानी करते रहते हैं। बहरहाल जैसा कि मैंने कहा बर्तानिया की जमअतों में वक़्फ़ जदीद में आलडरशाट की जमअत प्रथम है।

अब मैं आज के ख़ुत्बा के विषय की तरफ़ आता हूँ जो बदरी सहाबा रज़ि का ज़िक्र चल रहा है। पिछले से पहले ख़ुत्बे में हज़रत सअद बिन अबादह रज़ि का ज़िक्र चल रहा था और कुछ रह गया था। आज भी उनके ज़िक्र के हवाले से ही वर्णन करूँगा। लेकिन यहां भी एक हवाले की दुरुस्ती की ज़रूरत है जो पिछले ख़ुत्बा में मैं ने वर्णन किया था।यद्यपि एहसास के बावजूद मैं ने हवाले भेजने वालों को ज़िक्र तो नहीं किया लेकिन रिसर्च सेल में हमारे काम करने वालों को ख़ुद ही एहसास हो गया और उन्होंने ये दुरुस्ती भेजी और इस से बहरहाल मेरी ये ग़लतफ़हमी जो मुझे भी थी वह भी दूर हो गई। माशा अल्लाह अपनी तरफ़ से तो बड़ी मेहनत से काम कर के ये हवाले निकालते हैं लेकिन कई बार भाग बाज़ी से ऐसी तहरीरों से गुज़र जाते हैं जो दो सहाबा के मिलती-जुलती घटनाओं को मिला देती हैं। इसी तरह की बार अरबी इबारतों के अनुवाद में भी शब्दों का सही चुनाव ना होने की वजह से हक़ीक़त वाज़िह नहीं होती। बहरहाल इस हवाले से अब उन्होंने ख़ुद ही दुरुस्ती कर के भिजवाई है जो मैं पहले वर्णन करूँगा। फिर बाक़ी ज़िक्र होगा

27 दिसम्बर के ख़ुत्बे में हज़रत सअद बिन अबादह रज़ि के परिचय में यह बयान हुआ था कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद रज़ि और तुलेब बिन अमीर को भाई भाई बनाया था जो मक्का से हिज्रत कर के मदीने आए थे और इब्ने इसहाक़ के अनुसार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि और हज़रत अबूज़र ग़फ्फारी रज़ि को भाई भाई बनाया था थी लेकिन कुछ को इस से मतभेद भी है और वाक़दी ने इस का इनकार किया है क्योंकि उस के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भाई भाई बनान जंग बदर से पहले सहाबा रज़ि के मध्य क़ायम फ़रमाई थी। हज़रत अबूज़र ग़फ़्फ़ारी जो उस वक़्त मदीना में मौजूद नहीं थे और वह आए नहीं थे और जंग बदर और उहद और ख़ंदक़ में भी शामिल नहीं थे और इन जंगों के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए थे तो मैंने यह बताया था कि यह उनकी दलील है। बहरहाल यह इस तरह नहीं है। भाई भाई बनाने का वर्णन दरअसल हज़रत मुंज़िर बिन अमरो बिन ख़नेसु रज़ि के अन्तर्गत था।

(उसुदुल ग़ाबह भाग 5 पृष्ठ 258 मंज़र बिन अमरो प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 2003 ई)

रिसर्च सेल वालों ने ख़ुद ही लिखा है कि जिस किताब से यह लिया गया है वहां उनके साथ हज़रत सअद बिन अबादह रज़ि का भी ज़िक्र था तो रिसर्च सेल की तरफ़ से भूल से यह इबारत हज़रत सअद रज़ि के साथ भी वर्णन कर दी गई जबकि हज़रत मंज़र बिन अमरो रज़ि के ज़िक्र में भाई भाई का यह ज़िक्र है और यह तफ़सील मैं पिछले साल के शुरू में 25 जनवरी के ख़ुत्बे में वर्णन कर चुका हूँ। बहरहाल यह एक दुरुस्ती है। अब आगे जो ज़िक्र चल रहे हैं वह यह हैं कि जब जंग ख़ंदक़ की घटना हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उयैना बिन हसन को मदीना की एक तिहाई खजूर इस शर्त पर देने की पेशकश के बारे में सोचा कि क़बीला ग़त्फ़ान के जो लोग उनके साथ हैं वह उन्हें वापस ले जाए। बाक़ी लोगों को छोड़ते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सिर्फ हज़रत सअद बिन मआज़ रज़ि और हज़रत सअद बिन उबादह रज़ि से मश्वरा मांगा। इस पर इन दोनों ने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम! अगर आप को अल्लाह तआला की तरफ़ से ऐसा करने का हुक्म हुआ है तो आप ऐसा कर दें। अगर ऐसा नहीं तो फिर बख़ुदा हम कुछ नहीं देंगे सिवाए तलवार के अर्थात हम अपना हक़ लेंगे या जो भी इस की सज़ा है वह उनको इस मुनाफ़क़त की या अह्द की पाबंदी न करने की मिलेगी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुझे किसी बात का हुक्म नहीं दिया गया। यह मेरी ज़ाती राय है जो मैंने तुम दोनों के सामने रखी है। इन दोनों ने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो वसल्लम! इन लोगों ने जाहिलियत में हमसे ऐसी ही लालच नहीं की तो आज क्यूँ-कर? जबकि अल्लाह हमें आप के द्वारा हिदायत दे चुका है अर्थात कि यह जो पहला उसूल उनके साथ चल रहा था आज भी वही चलेगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन दोनों के इस जवाब से ख़ुश गए।

(उसुदुल ग़ाबह भाग 2 पृष्ठ 442 सअद बिन उबादा, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 2003 ई)

इस की तफ़सील जंग ख़नदक़ के हालात के ज़िक्र में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने इस तरह बयान फ़रमाई है कि ये दिन मुस्लमानों के लिए निहायत तकलीफ़ और परेशानी और ख़तरे के दिन थे और जैसे जैसे यह घेराव लम्बा होता

जाता था मुस्लमानों की मुक़ाबला की ताकत लाज़िमन कमज़ोर होती जाती थी और यद्यपि उनके दिल ईमान तथा ख़िलास से भरे हुए थे मगर जिस्म माद्दी कानून के अधीन चलता है तो वे कमज़ोर होता चला जा रहा था। अर्थात जिस्म की ज़रूरतें हैं, आराम है, ख़ुराक है, घेराव लम्बा हो गया तो इस की वजह से बे-आरामी भी थी। सही रंग में ख़ुराक भी पूरी नहीं हो रही थी इसलिए थकावट भी पैदा हो रही थी, कमज़ोरी भी पैदा हो रही थी, यह जिस्म का क़ुदरती तक़ाज़ा है । तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन हालात को देखा तोआप ने अन्सार के रईसों सअद बिन मआज़ रज़ि और सअद बिन अबादह रज़ि को बुला कर उन्हें हालात बतलाए और मश्वरा मांगा कि इन हालात में हमें क्या करना चाहिए कि मुस्लमानों की, ग़रीबों की तो ये हालत हो रही है और साथ ही अपनी तरफ़ से यह ज़िक्र फ़रमाया कि अगर तुम लोग चाहो तो यह भी हो सकता है कि क़बीला ग़त्फ़ान को मदीने के मुहासिल में से कुछ हिस्सा देना कर के इस जंग को टाल दिया जाए। सअद बिन मआज़ रज़ि और सअद बिन अबादह रज़ि ने एक ज़बान हो कर यह निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह ! अगर आप क़ो इस के बारे में कोई ख़ुदाई वह्य हुई है तो स्वीकार है। इस अवस्था में आप बेशक ख़ुशी से इस परामर्श के अनुसार कार्रवाई फ़रमाएं। आप ने फ़रमाया नहीं मुझे इस मामला में वह्य कोई नहीं हुई। मैं तो सिर्फ आप लोगों की तकलीफ़ की वजह से मश्वरा के तरीक़ पर पूछ रहा हूँ। इन दोनों सअदों ने जवाब दिया कि फिर हमारा यह मश्वरा है कि जब हमने शिर्क की हालत में कभी किसी दुश्मन को कुछ नहीं दिया तो अब मुस्लमान हो कर क्यों दें। अर्थात जो उन के वहां क़ानून हैं उस के अनुसार अब भी अमल होगा। फिर आगे उन्होंने कहा कि अल्लाह की कसम हम उन्हें तलवार की धार के सिवा कुछ नहीं देंगे। चूँकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अन्सार ही की वजह से फ़िक्र थी। दूसरे लोग भी वहां के रहने वाले हैं लेकिन मदीना के अन्सार को कोई एतराज़ या लम्बे घेराव से परेशानी या बेचैनी न पैदा हो तो अन्सार की वजह से यह फ़िक्र थी जो मदीना के असल बाशिंदे थे और शायद इस मश्वरा में आप का मक़सद भी सिर्फ यही था कि अन्सार की ज़हनी कैफ़ीयत का पता लगाऐं कि क्या वे इन मसीबतों में परेशान तो नहीं हैं और अगर वे परेशान हों तो उनकी दिलजोई फ़रमाई जाए। इसलिए आप ने पूरी ख़ुशी के साथ उनके इस मश्वरे को क़बूल फ़रमाया और फिर जंग भी जारी।

(उद्धरित सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत साहिबज़ादा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 589-590)

जंग ख़ंदक़ के हालात वर्णन करते हुए सीरत ख़ातिम ख़ातमन्नबिय्यीन में क़बीला बनू क़ुरैज़ा की ग़द्दारी का ज़िक्र करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि लिखते हैं कि

''अबू सुफ़ियान ने यह चाल चली कि क़बीला बनू नज़ीर के यहूदी रईस हुयययई बिन अख़तब को यह हिदायत दी कि वह रात के अन्धेरे के पर्दे में बनू कुरेज़ा के क़िला की तरफ़ जाए और उनके रईस कआब बिन असद के साथ मिलकर बनू क़ुरैज़ा को अपने साथ मिलाने की कोशिश करे। अत: हुययई बिन अख़तब अवसर लगा कर कअब के मकान पर पहुंचा। शुरू शुरू में तो कअब ने इस की बात सुनने से इनकार किया और कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हमारे वादे हैं और मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमेशा अपने वादों को वफ़ादारी के साथ निभाया है। इसलिए मैं इस से ग़द्दारी नहीं कर सकता मगर हुययई ने उसे ऐसे लालच दिए और इस्लाम की शीघ्र तबाही का ऐसा यक़ीन दिलाया और अपने इस अह्द को कि जब तक हम इस्लाम को मिटा ना लेंगे मदीना से वापस नहीं जाऐंगे इस मज़बूती से वर्णन किया कि अन्त में वह राज़ी हो गया और इस तरह बनू कुरैज़ा की ताक़त का वज़न भी इस पलड़े के वज़न में आकर शामिल हो गया।''जो मिलाने आया था बाहर से ''जो पहले से ही बहुत झुका था''अर्थात यानी पहले ही उनमें ताक़त थी। दुनियावी ताक़त उनके पास पहले ही बहुत थी। ''आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब बनू कुरैज़ा की इस ख़तरनाक ग़द्दारी का इल्म हुआ तो आप ने पहले तो दो तीन बार ख़ुफ़ीया ख़ुफ़ीया ज़ुबैर बिन अलअवाम रज़ि को हालात पूछने के लिए भेजा और फिर बाज़ाबता तौर पर क़बीला ओस तथा ख़ज़रज के रईस सअद बिन मआज़ रज़ि और सअद बिन अबादह रज़ि और कुछ दूसरे प्रभावशाली सहाबा को एक वफ़द के तौर पर बनू क़ुरैज़ा की तरफ़ रवाना फ़रमाया और उनको यह ताकीद फ़रमाई कि अगर कोई चिन्ता की ख़बर हो तो वापस आकर उस को सब के सामने इज़हार न करें बल्कि इशारा से काम लें ताकि लोगों में चिन्ता न पैदा हो। जब ये लोग बनू क़ुरैज़ा के घरों में पहुंचे और उनके रईस कआब बिन असद के पास गए तो वह बद किस्मत उनको निहायत मग़रूराना अंदाज़ से मिला सअदेन'' अर्थात दोनों सअद जो थे उनकी तरफ़ से मुआहिदा का ज़िक्र होने पर वह और इस के क़बीला के लोग बिगड़ कर बोले कि 'जाओ मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) और हमारे मध्य कोई मुआहिदा नहीं है।'यह शब्द सुनकर सहाबा का ये वफ़द वहां से उठकर चला आया और सअद बिन मआज़ रज़ि और सअद बिन अबादह रज़ि ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर उचित तरीक़ा पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हालात से सूचना दी।'

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 584-585)

बहरहाल फिर जो भी उनके साथ जंग थी या सज़ा मिलनी थी वह जारी रही। जंग बनू क़ुरैज़ा के अवसर पर हज़रत सअद बिन अबादह रज़ि ने कई ऊंटों पर खजूरें लाद कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मुस्लमानों के लिए भेजीं जो इन सब का खाना था। इस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि खजूर क्या ही अच्छा खाना है।

(सब्बलुलहुदा वर्रशाद भाग 05 पृष्ठ 06 फ़ी जंग बनी कुरैज़, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1993 ई)

जंग मौत: जो जमादी अल ऊला सन आठ हिज्री में हुई । इस में हज़रत ज़ैद रज़ि शहीद हो गए तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके घर वालों के पास ताज़ियत के लिए गए तो उनकी बेटी परेशानी और तकलीफ़ के कारण रोते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आई। इस पर आप भी बहुत ज़्यादा रोने लगे। इस पर हज़रत सअद बिन अबादह रज़ि ने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह! यह क्या आप ने फ़रमाया।هٰذَا شَوْقُ الْحَبِيْبِ اِلَى حَبِيْبِهٖ यह एक महबूब की अपने महबूब से मुहब्बत है

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 34 ज़ैद अलहुब बिन हारिसा प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1990ई)

सही बुख़ारी की एक और रिवायत है। यह पहली सही बुख़ारी की नहीं थी। यह घटना दूसरी है और सही बुख़ारी की रिवायत से है कि हशाम बिन उर्वा अपने बाप से रिवायत करते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़तह मक्का के साल कूच फ़रमाया तो क़ुरैश को यह ख़बर पहुंची। तब अबू सुफ़ियान बिन हरब, हकीम बिन हिज़ाम और बुदैल बिन वर्कअ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तलाश में निकले। वे चल पड़े यहां तक कि मर्रु ज़्ज़हरान मुक़ाम पर पहुंचे। मर्रु ज़्ज़हरान मक्का की तरफ एक स्थान है जिसमें बहुत से चश्मे और खजूर के बाग़ा हैं। यह मक्का से पाँच मील के फ़ासला पर स्थित है। बहरहाल जब वहां पहुंचे तो उन्होंने क्या देखा कि बेशुमार आगें रोशन हैं जैसे हज के मौक़ा पर अर्फ़ात के स्थान की आगें होती हैं। अबू सुफ़ियान ने कहा ये कैसी हैं? यूं मालूम होता है कि अर्फ़ात की आगें हैं। बदील बिन वर्कअ ने कहा बनू अमरो की आगें मालूम होती हैं अरथात ख़ुज़ाआ क़बीला की। अबू सुफ़ियान ने कहा अमरो का क़बीला इस संख्या से बहुत कम है। इतने में उनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पहरेदारों में से कुछ लोगों ने देख लिया और उन तीनों को पकड़ कर गिरफ़्तार कर लिया और फिर उनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ले के आए। अबू सुफ़ियान ने इस्लाम क़बूल कर लिया। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चले अर्थात मक्का की तरफ़ तो आप ने हज़रत अब्बास रज़ि से फ़रमाया। अबू सुफ़ियान को पहाड़ के दर्रे पर रोके रखना ताकि वह मुस्लमानों को देख ले। अत: हज़रत अब्बास रज़ि ने उसे रोके रखा। विभिन्न क़बीले नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ गुज़रने लगे। लश्कर का एक एक दस्ता अबूसुफ़ियान के सामने से गुज़रता गया। जब एक गिरोह गुज़रा तो अबूसुफ़ियान ने कहा अब्बास रज़ि यह कौन लोग हैं? उन्होंने कहा यह क़बीला गफ्फार के लोग हैं। अबू सुफ़ियान ने कहा मुझे ग़फ़्फ़ार से किया लेना देना। फिर जुहैना वाले गुज़रे। अबू सुफ़ियान ने वैसे ही कहा। फिर सअद बिन हुज़ैमा वाले गुज़रे। फिर उसने वैसे ही कहा। फिर सुलेम वाले गुज़रे। फिर उसने वैसे ही कहा। यहां तक कि आख़िर में एक ऐसा लश्कर आया कि वैसा उसने कभी नहीं देखा था। अबूसुफ़ियान ने पूछा ये कौन हैं? हज़रत अब्बास रज़ि ने कहा अन्सार हैं और उनके सरदार सअद बिन अबादह रज़ि हैं जिनके पास झंडा है। हज़रत सअद बिन अबादह रज़ि ने पुकार कर अबू सुफ़ियान! आज का दिन घमसान

की लड़ाई का दिन है। आज काअबा में लड़ाई हलाल होगी। अबू सुफ़ियान ने यह सुनकर अब्बास रज़ि! बर्बादी का ये दिन क्या ख़ूब होगा अगर मुक़ाबले का मौक़ा मिल जाता। अर्थात कि मैं दूसरी तरफ़ होता या कि इस तरफ़ होने की वजह से मुझे भी मौक़ा मिलता क्योंकि इस्लाम क़बूल कर लिया था। फिर एक और दस्ता फ़ौज का आया और वे तमाम लश्करों से छोटा था। उनमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे और आप के साथी मुहाजरीन थे और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झंडा हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि के पास था। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अबू सुफ़ियान के पास से गुज़रे तो अबूसुफ़ियान ने कहा क्या आप को इल्म नहीं कि सअद बिन अबादह रज़ि ने क्या कहा है? आप ने पूछा क्या कहा है? उसने कहा कि ऐसा कहा है। जो भी उन्होंने शब्द प्रयोग किए थे (वह बताए)। आप ने फ़रमाया सअद रज़ि ने दरुस्त नहीं किया बल्कि यह वह दिन है जिसमें अल्लाह काअबा की अज़मत क़ायम करेगा और काअबा पर ग़लाफ़ चढ़ाया जाएगा। कोई जंग नहीं होगी।

(सही बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी,बाब अयना रकज़ न्नबी(सल.) अर्राए यौमुल फ़तह हदीस 4280) (मोअज्जमुल बुलदान भाग 4 पृष्ठ 247)

इस घटना को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने ज़रा थोड़ी सा विस्तार से वर्णन किया है। वह इस तरह है कि जब लश्कर मक्का की तरफ़ बढ़ा तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्बास रज़ि को हुक्म दिया कि किसी सड़क के कोने पर अबूसुफ़ियान और इस के साथियों को लेकर खड़े हो जाओ ताकि वह इस्लामी लश्कर और इस की फ़दाईत को देख सकें। हज़रत अब्बास रज़ि ने ऐसा ही किया। अबूसुफ़ियान और इस के साथियों के सामने से एक के बाद दूसरे अरब के क़बीले गुज़रने शुरू हुए जिनकी सहायता पर मक्का भरोसा कर रहा था अर्तात मक्का वाले समझते थे यह मदद करेंगे और वे सब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे, मगर आज वो क़बीले कुफ्र का झंडा नहीं लहरा रहे थे , आज वे इस्लाम का झंडा लहरा रहे थे और उनकी ज़बान पर ख़ुदाए क़ादिर की तौहीद का ऐलान था। वे मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जान लेने के लिए आगे नहीं बढ़ रहे थे जैसा कि मक्का वाले उम्मीद करते थे बल्कि वे मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए अपने ख़ून का आख़िरी क़तरा तक बहाने के लिए तैयार थे और उनकी इंतिहाई इच्छा यही थी कि ख़ुदाए वाहिद की तौहीद और इस की तब्लीग़ को दुनिया में क़ायम कर दें। लश्कर के बाद लश्कर गुज़र रहा था कि इतने में अशरी क़बीले का लश्कर गुज़रा। इस्लाम की मुहब्बत और इस के लिए क़ुर्बान होने का जोश उनके चेहरों से स्पष्ट था और उनके नारों से ज़ाहिर था। अबू सुफ़ियान ने कहा अब्बास यह कौन हैं। अब्बास रज़ि ने कहा यह अशअरी क़बीला है। अबूसुफ़ियान ने हैरत से अब्बास रज़ि का मुँह देखा और कहा सारे अरब मैं उनसे ज़्यादा मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कोई दुश्मन नहीं था। अब्बास रज़ि ने कहा कि यह ख़ुदा का फ़ज़ल है कि जब उसने चाहा उनके दिलों में इस्लाम की मुहब्बत दाख़िल हो गई। सबसे आख़िर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुहाजिरीन तथा अन्सार का लश्कर लिए हुए गुज़रे। ये लोग दो हज़ार की संख्या में थे और सिर से पांव तक ज़िरह बक्तरों में छुपे हुए थे। हज़रत उमर रज़ि उनकी सफ़ों को दरुस्त करते चले जाते थे और फ़रमाते जाते थे कि क़दमों को सँभाल कर चलो ताकि सफ़ों की दूरी ठीक रहे। इन पुराने फ़िदाकाराने इस्लाम का जोश और उनका अज़म और उनका वलवला उनके चेहरों से टपका पड़ता था। अबूसुफ़ियान ने उनको देखा तो इस का दिल दहल गया। उसने अब्बास! यह कौन लोग हैं? उन्होंने, अब्बास रज़ि ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अन्सार तथा मुहाजिरीन के लश्कर में जा रहे हैं। अबूसुफ़ियान ने जवाब दिया इस लश्कर का मुक़ाबला करने की दुनिया में किस को ताक़त है। फिर वह हज़रत अब्बास रज़ि से मुख़ातिब हुआ और कहा तुम्हारे भाई का बेटा आज दुनिया में सबसे बड़ा बादशाह हो गया है। अब्बास रज़ि ने कहा अब भी तेरे दिल की आँखें नहीं खुलीं। यह बादशाहत नहीं है, यह तो नबुव्वत है। अबू सुफ़ियान ने कहा हाँ हाँ अच्छा फिर नबुव्वत ही सही। जिस वक़्त यह लश्कर अबू सुफ़ियान के सामने से गुज़र रहा था तो अन्सार के कमांडर सअद बिन अबादह रज़ि ने अबू सुफ़ियान को देखकर कहा।आज ख़ुदा तआला ने हमारे लिए मक्का में दाख़िल होना तलवार के ज़ोर से हलाल कर दिया है। आज क़ुरैशी क़ौम ज़लील कर दी जाएगी। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अबूसुफ़ियान के पास से गुज़रे तो उसने बुलंद आवाज़ से कहा कि हे रसूलुल्लाह!क्या आप ने अपनी क़ौम के क़त्ल की इजाज़त दे दी है। अभी अभी अन्सार के सरदार सअद रज़ि और इस के साथी ऐसा कह रहे थे। उन्होंने बुलन्द आवाज़ से यह कहा है कि आज लड़ाई होगी और मक्का की हुर्मत आज हमको लड़ाई से रोक नहीं रख सकेगी और क़ुरैश को हम ज़लील कर के छोड़ेंगे। हे रसूलुल्लाह ! आप तो दुनिया में सबसे ज़्यादा नेक, सबसे ज़्यादा रहीम और सबसे ज़्यादा रिश्तेदारों से रहम करने वाले इन्सान हैं। क्या आज आप अपनी क़ौम के ज़ुल्मों को भूल ना जाऐंगे। अबू सुफ़ियान की यह शिकायत और वेदना सुनकर वह मुहाजिरीन भी तड़प गए जिनको मक्का की गलियों में पीटा और मारा जाता था जिनको घरों और जायदादों से बेदख़ल किया जाता था और उनके दिलों में भी मक्का के लोगों की निसबत रहम पैदा हो गया और उन्होंने कहा कि हे रसूलुल्लाह !अन्सार ने मक्का वालों के अत्याचारों की जो घटनाएं सुनी हुई हैं आज उनकी वजह से हम नहीं जानते कि वे क़ुरैश के साथ किया मामला करें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अबू सुफ़ियान, सअद रज़ि ने ग़लत कहा है। आज रहम का दिन है। आज अल्लाह तआला क़ुरैश और ख़ाना काअबा को इज़्ज़त बख़शने वाला है। फिर आप ने एक आदमी को सअद रज़ि की तरफ़ भिजवाया और फ़रमाया अपना झंडा अपने बेटे केस रज़ि को दे दो कि वह तुम्हारी जगह अन्सार के लश्कर का कमांडर होगा। इस तरह आप ने झंडा उनसे ले लिया और उनके बेटे को दे दिया। इस तरह आप ने मक्का वालों का दिल भी रख लिया और अन्सार के दिलों को भी सदमा पहुंचने से महफ़ूज़ रखा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को केस रज़ि पर पूरा भरोसा था जो सअद रज़ि के बेटे थे क्योंकि क़ैस निहायत ही शरीफ़ तबीयत के नौजवान थे। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि कहते हैं ऐसे शरीफ़ थे, उनकी शराफ़त का यह हाल था कि तारीख़ में लिखा है कि उनकी वफ़ात के क़रीब जब कुछ लोग उनकी इयादत के लिए आए और कुछ ना आए तो उन्होंने अपने दोस्तों से पूछा कि क्या वजह है कि कुछ दोस्त मेरे वाक़िफ़ हैं और मेरी इयादत के लिए नहीं आए। उनके दोस्तों ने कहा कि आप बड़े मुख़य्यर आदमी हैं। केस रज़ि बड़े मुख़य्यर थे और लोगों की बड़ी मदद करते थे तो आप हर शख़्स को इस की तकलीफ़ के वक़्त क़र्ज़ा दे देते हैं। किसी ने मांगा क़र्ज़ा दे दिया और शहर के बहुत से लोग आप के मक़रूज़ हैं और वह इसलिए आप की इयादत के लिए नहीं आए कि शायद आप को ज़रूरत हो इस हालत में और आप उनसे रुपया मांग बैठें। जो क़र्ज़ दिया हुआ है वह वापस ना मांग लें। आप ने फ़रमाया ओहो, बड़ा अफ़सोस का इज़हार किया कि मेरे दोस्तों को बिना कराण यह तकलीफ़ हुई है। उनको अगर यह ख़्याल आया तो मेरी तरफ़ से तमाम शहर में घोषणा कर दो, ऐलान कर दो कि हर शख़्स जिस पर केस रज़ि का क़र्ज़ा है वह उसे माफ़ है। इस पर कहते हैं कि इस क़दर लोग उनकी इयादत के लिए आए कि उनके मकान की सीढ़ियां टूट गईं।

(उद्धरित दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 341से 343)

जंग हुनैन जिसका दूसरा नाम जंग हवाज़िन भी है, हुनीन मक्का मुकर्रमा और ताइफ के मध्य मक्का से तीस मील की दूरी पर स्थित एक घाटी है। जंग हुनैन शवाल आठ हिज्री में फ़तह मक्का के बाद हुई थी। जो अम्वाल ग़नीमत इस जंग में हासिल हुए वह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुहाजिरीन में तक़सीम कर दिए। अन्सार ने अपने दिलों में इस बात को महसूस किया। इस के बारे में एक तफ़सीली रिवायत मस्नद अहमद बिन हंबल में इस तरह वर्णित है कि हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो से रिवायत है कि जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ुरैश और अन्य अरब के क़बीलों में माल तक़सीम फ़रमाया तो अन्सार के हिस्से में इस में से कुछ ना आया। अन्सार ने इस को महसूस किया और उनमें उस के बारे में बातें होने लगीं। यहां तक कि उनमें से एक कहने वाले ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी क़ौम से जा मिले हैं, हमें भूल गए। मुहाजिरों को दे दिया। हज़रत सअद बिन अबादह रज़ि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और निवेदन किया कि हे अल्लाह ! यह क़बीला अर्थात अन्सार जो हैं आप के बारे में अपने नफ़सों में कुछ महसूस कर रहा है ।आप ने जो अपनी क़ौम और विभिन्न अरब के क़बीलों में माल फै बांटा है और अन्सार को इस में से कुछ भी नहीं मिला। आप ने पूछा सअद! इस मामले में तुम किस तरफ़ हो? तुम अपनी बात करो। उन्होंने अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैं अपनी क़ौम का केवल एक फ़र्द हूँ और मेरी क्या हैसियत है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अपनी क़ौम को इस अहाते में इकट्ठा करो अर्थात वहां एक बड़ा अहाता था , एक जगह थी वहां ले के आओ। अत: हज़रत सअद रज़ि निकले और उन्होंने अन्सार को इस अहाते में

इकट्ठा कर लिया। कुछ मुहाजिरीन भी आ गए। हज़रत सअद रज़ि ने उन्हें अंदर आने दिया और कुछ और लोग अंदर आए तो हज़रत सअद रज़ि ने उन्हें रोक दिया। जब सब इकट्ठे हो गए तो हज़रत सअद रज़ि ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया कि अन्सार जमा हो गए हैं। रावी कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके पास तशरीफ़ लाए और अल्लाह की हमद तथा प्रशंसा बयान करने के बाद फ़रमाया। हे गिरोह अन्सार!-यह क्या बातें हैं जो तुम्हारी तरफ़ से मुझे पहुंच रही हैं, कि तुम्हें इस बात पर कुछ नाराज़गी है कि तुम्हें माल नहीं मिला। क्या जब मैं तुम्हारे पास आया तो तुम गुमराही में ना पड़े हुए थे कि अल्लाह ने तुम्हें हिदायत से सरफ़राज़ फ़रमाया? तुम माली तंग-दस्ती का शिकार ना थे कि अल्लाह ने तुम्हें मालदार बना दिया? तुम एक दूसरे के दुश्मन न थे कि अल्लाह ने तुम्हारे दिलों में एक दूसरे की मुहब्बत डाल दी? उन्होंने कहा क्यों नहीं। अल्लाह और इस का रसूल ज़्यादा एहसान करने वाला और अफ़ज़ल हैं। आप ने फ़रमाया कि हे अन्सार गिरोह! तुम मेरी बात का जवाब क्यों नहीं देते? उन्होंने कहा हे रसूलुल्लाह हम आप को क्या जवाब दें जबकि एहसान और फ़ज़ल अल्लाह और इस के रसूल के लिए है। आप ने फ़रमाया अल्लाह की कसम अगर तुम चाहते तो यह कह सकते थे और तुम्हारी वह बात सच्ची होती और तुम्हारी तसदीक़ भी हो जाती कि आप हमारे पास इस हाल में आए थे जब आप को झुटला दिया गया था। अत: हमने आप की तसदीक़ की और आपऐ को आप के अपनों ने छोड़ दिया था तो हमने आप की मदद की। आप हमारे पास आए कि लोगों ने आपऐ को निकाल दिया था तो हमने आप को पनाह दी। आप को हमने एक बड़े कुन्बे वाला पाया तो हमने आप के साथ भाई भाई बने। हे अन्सार के गिरोह !क्या तुमने दुनिया के हक़ीर से माल पर दुख महसूस किया है? फिर आप ने यह शब्द फ़रमाने के बाद कहा कि तुम ये ये जवाब दे सकते थे। फिर फ़रमाया कि हे अन्सार गिरोह ! क्या तुमने दुनिया के हक़ीर माल पर दुख महसूस किया है कि मैंने तुम्हें नहीं दिया और उनको दे दिया जो मैंने इस क़ौम की तालीफ़-ए-क़लब के लिए दिया है ताकि वह इस्लाम क़बूल कर लें और मैंने तुम्हें तुम्हारे इस्लाम के सपुर्द कर दिया है। उनकी तालीफ़ क़लब की है ताकि इस्लाम क़बूल कर लें और मज़बूत हों और तुम्हें तुम्हारे इस्लाम के सपुर्द कर दिया है। हे अन्सार के गिरोह !क्या तुम इस बात पर ख़ुश नहीं कि लोग भेड़ बकरियां और ऊंट लेकर जाएं और तुम रसूलुल्लाह को लेकर अपने घरों में लौटो , सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम। फिर आप ने फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जान है अगर हिजरत ना होती तो मैं अन्सार में से एक शख़्स होता। और अगर लोग एक वादी में चल रहे हों और अन्सार दूसरी वादी में चल रहे हूँ तो मैं अन्सार की वादी को इख़तियार करूँगा। हे अल्लाह अन्सार पर रहम फ़र्मा और अन्सार के बेटों पर और अन्सार के बेटों के बेटों पर। रावी कहते हैं इस पर वे सब अन्सार रोने लगे जो वहां मौजूद थे यहां तक कि उनकी दाढ़ियाँ उनके आँसूओं से गीली हो गईं और वे कहने लगे कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर तक़सीम और हिस्से के लिहाज़ से राज़ी हैं अर्थात जो भी आप ने तक़सीम की है इस पर राज़ी हैं और आप हमारे लिए काफ़ी हैं। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वापस तशरीफ़ ले गए और लोग भी चले गए।

(मस्नद अहमद बिन हनबल भाग 4 पृष्ठ 192-193 मस्नद अबी सईद अलख़ुदरी रज़ि प्रकाशन आलिमुल कुतुब बेरूत1998 ई)

(एटलस सीरतुन्नबवी पृष्ठ 408-409 प्रकाशन दारुस्लाम अल-रियाज़1424 हिजरी)

(अस्सीरतुल हल्बिया भाग 3पृष्ठ 163 से-175 बाब जंग अत्तायफ़ प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 2002 ई)

हुज्जतुल विदा के लिए मदीना से सफ़र कर के जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुक़ाम हज पर पहुंचे तो वहां आप की सवारी गुम हो गई। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ि की सवारी एक ही थी और वे हज़रत अब्बू बकर रज़ि के ग़ुलाम के पास थी जिससे रात के वक़्त वो गुम हो गई। हज़रत सफ़वान बिन मुअत्तल रज़ि क़ाफ़िला में सबसे पीछे थे। वह अपने साथ इस ऊंटनी को ले आए और सारा सामान भी उस पर मौजूद था। वह ऊंटनी जो ग़म गई थी उस को ले आए और वह सामान भी उस पर था।

हज़रत सअद बिन अबादह रज़ि ने जब यह बात सुनी तो अपने बेटे केस रज़ि के साथ आए। इन दोनों के साथ एक ऊंट था जिस पर रास्ता का समान था। सारा सफ़र का सामान लदा हुआ था। वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप उस वक़्त अपने घर के दरवाज़े के पास खड़े हुए थे। तब अल्लाह तआला ने आप की सामान वाली सवारी वापस लौटा दी थी अर्थात उस वक़्त तक आप की वह ऊंटनी मिल चुकी थी जो ग़ुमी थी। जब सअद रज़ि आए हैं तो हज़रत सअद रज़ि ने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह!हमें मालूम हुआ है कि आप की सामान वाली सवारी गुम हो गई है। यह हमारी सवारी उस के बदले में है। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला वह सवारी हमारे पास ले आया है। अर्थात वह जो गुमी थी वह मिल गई है। तुम दोनों अपनी सवारी वापस ले जाओ। अल्लाह तुम दोनों में बरकत डाले।

(सबलुल्हुदा वल रिशाद भाग 8 पृष्ठ 460 ज़िक्र नज़ूला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बिल अर्ज, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1993 ई)

(किताबुल मग़ाज़ी भाग 3 पृष्ठ 1093 बाब हज्जतुल विदा प्रकाशन आलिमुल कुतुब बेरूत 1984 ई)

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेटी ने आप को कहला भेजा कि मेरा बच्चा मृत्यु की हालत में है हमारे पास आएं तो आप ने कहला भेजा और फ़रमाया कि अल्लाह ही का है जो ले-ले और इसी का है जो प्रदान करे और हर बात का उस के हाँ एक वक़्त निर्धारित है। इसलिए तुम सब्र करो और अल्लाह तआला की रजामंदी चाहो। उन्होंने फिर आप को बुला भेजा और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़सम दी कि उनके पास ज़रूर आएं। आप उठे और आप के साथ हज़रत सअद बिन इबादा रज़ि, हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि, हज़रत अबी बिन कअब रज़ि, हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि और कई आदमी नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास थे। जब आप पहुंचे तो बच्चा उठा कर लाया गया। वह बच्चा उस वक़्त दम तोड़ रहा था और ऐसी ही दम तोड़ने की आवाज़ आ रही थी। उसमान रज़ि कहते थे कि मेरा ख़्याल है उसामह रज़ि ने कहा कि जैसे पुरानी मशक ठोकने से आवाज़ देती है अर्थात ऐसी आवाज़ आ रही थी कि बड़े बड़े सांस ले रहा था। बच्चे की यह हालत देखकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आँसू बहने लगे। हज़रत सअद रज़ि ने कहा कि हे रसूलुल्लाह यह क्या है!आप ने जवाब दिया यह रहमत है जो अल्लाह तआला ने अपने बंदों के दिलों में पैदा की है और अल्लाह भी अपने बंदों में से उन्ही पर रहम करता है जो दूसरों पर रहम करते हैं।(सही अल-बुख़ारी किताबुल जनायज़, हदीस1284)यह कोई जज़बाती हालत है तो ऐसी कोई बात नहीं। केवल अल्लाह तआला का फ़ज़ल है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र रज़ी अल्लाह अन्हुमा बयान करते हैं कि हज़रत सअद बिन अबादह रज़ि को किसी बीमारी की शिकायत हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अब्दुर्र रहमान बिन औफ़ रज़ि, हज़रत सअद बिन अबी वकास रज़ि और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि इन सबको अपने साथ लेकर उनका हल चाल पूछने के लिए तशरीफ़ ले गए। जब उनके पास पहुंचे तो आपने उनको घर वालों के जमघट में पाया। आप ने फ़रमाया क्या ये फ़ौत हो गए? लोग बीमारी की वजह से इकट्ठे हुए थे, बहुत बीमारी थी। घर वाले इर्द गिर्द इकट्ठे थे। उन्होंने कहा नहीं हे अल्लाह के रसूल! फ़ौत नहीं हुए। बहरहाल नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़रीब गए। उनकी हालत देखी तो आप रो पड़े। लोगों ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को रोते देखा तो वे भी रो दिए। फिर आप ने फ़रमाया कि सुनते नहीं। देखो कि अल्लाह आँख के आँसू निकलने से अज़ाब नहीं देता और न दिल के दुखी होने पर बल्कि उस की वजह से सज़ा देगा या रहम करेगा और आप ने अपनी ज़बान की तरफ़ इशारा किया और फिर फ़रमाया और लाश को भी इस के घर वालों के इस पर रोना धोना करने की वजह से अज़ाब मिलता है।

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

(सही अल-बुख़ारी किताबुल जनायज़, हदीस 1304)

लाश पर रोना धोना करना जो है वह ग़लत है। इस वक़्त हो सकता है कि देखकर उनकी ऐसी हालत हो या आप की दुआ की कैफ़ीयत पैदा हुई हो इस में भी आप को रोना आ गया हो लेकिन बाक़ियों ने यह समझा हो कि उनका आख़िरी वक़्त है इसलिए रोना शुरू कर दिया। इस बात पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें समझाया कि रोना मना नहीं है लेकिन बुरी बात और मना यह है कि इन्सान अल्लाह तआला की क़ज़ा क़दर के ज़ाहिर होने पर नाराज़ हो जाए। अत: आँसू अल्लाह तआला की रज़ा चाहते हुए निकलें तो इस का रहम जज़ब करते हैं वर्ना अगर बुरा मना कर निकलें और इस पर रोना धोना किया जाए तो फिर यह सज़ा मिल जाती है। बहरहाल उस वक़्त फ़ौत नहीं हुए थे जबकि बीमारी उनकी थी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर थे कि अन्सार में से एक शख़्स आप के पास आया। उसने आप को सलाम किया। फिर वह अन्सारी पीछे मुड़ा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे भाई! मेरे भाई सअद बिन अबादह रज़ि का क्या हाल है? उसने कहा बेहतर है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम में से कौन उस की इयादत करेगा। आप उठे और हम आप के साथ उठ खड़े हुए और हम दस से कुछ ऊपर लोग थे। हम ने न जूते पहने थे ना जुराबें, ना टोपियां थीं ना क़मीज़। अर्थात बड़ी शीघ्रता में आप के साथ साथ चले गए। कहते हैं कि हम इस क़दर ज़मीन में चले यहां तक कि हम उनके अर्थात सअद बिन अबादह रज़ि के पास आए। सारे लोग उनके इर्दगिर्द इकट्ठे थे वे सब पीछे हट गए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के वे असहाब रज़ि जो आप के साथ थे उनके क़रीब आ गए। यह सही मुस्लिम की रिवायत है। उसी पहले घटना की इस रिवायत में है।

(सही मुस्लिम किताबुल जनायज़, फ़ी 2138))

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह बिन अमरो बिन हिराम रज़ि वर्णन करते हैं कि मेरे पिता ने मुझे हरीरा तैयार करने का हुक्म दिया। मैंने हरीरा तैयार किया। हरीरा मशहूर खाना है जो आटे और घी और पानी से बनता है बल्कि (कुछ ने कहा है कि)आटे और दूध से बनता है बहरहाल ये उन्होंने लुग़त हदीस में से अर्थ) निकाला है उन्होंने कहा है कि मैं उनके हुक्म के अनुसार वह हरीरा रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में लेकर हाज़िर हुआ। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस वक़्त घर में थे। आप ने फ़रमाया हे जाबिर रज़ि क्या यह गोश्त है? मैंने अर्ज़ की जी नहीं हे रसूलुल्लाह यह हरीरा है जो मैंने अपने पिता के हुक्म से बनाया है। फिर उन्होंने मुझे हुक्म दिया तो मैं आप की ख़िदमत में लेकर हाज़िर हुआ हूँ। फिर मैं वापस अपने पिता के पास आ गया। मेरे पिता ने पूछा क्या तुमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा। मैंने कहा जी। मेरे पिता ने पूछा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तुम्हें क्या कहा? मैंने बताया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से पूछा कि जाबिर! क्या यह गोश्त है? मेरे वालिद ने सुनकर कहा कि शायद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गोश्त की इच्छा हो रही हो। वालिद साहिब ने बकरी ज़िबह की, इस को भूना और मुझे हुक्म दिया कि यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बारगाह में पेश कर आओ। हज़रत जाबिर रज़ि बयान करते हैं कि मैंने वह बकरी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश कर दी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह तआला अन्सार को हमारी तरफ़ से नेक बदला दे विशेष रूप से अब्दुल्लाह बिन अमरो बिन हिरम और सअद बिन उबादा को।

(अलमुस्तदरक अलस्सहीहैन भाग 5 पृष्ठ 39-40 किताब दारुल फ़िक्र 2001 ई)

(फ़तहुल बारी किताबत्तआम भाग 9 पृष्ठ 678 प्रकाशन क़दीमी कुतुब ख़ाना कराची) (जहांगीर उर्दू लुग़त पृष्ठ 649 प्रकाशन जहांगीर बक्स लाहौर)

(Lexicon part 2 P: 539 London 1865)

हज़रत अबू उसेद से मर्वी है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अन्सार के घरानों में से बेहतरीन बनू नज्जार हैं। फिर बनू अब्द अश्हल। फिर बनू हारिस बिन ख़ज़रज। फिर बनू साइयदा और अन्सार के तमाम घरानों में भलाई है। ये सुनकर हज़रत सअद बिन अबादह रज़ि बोले और वह इस्लाम में उच्च पाया के थे। यह सही बुख़ारी की हदीस है अर्थात कि उच्च स्तर के थे कि मैं समझता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें हम से अफ़ज़ल क़रार दिया है। इस पर उन से कहा गया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप को भी तो बहुत से लोगों पर फ़ज़ीलत दी है।

(सही अल-बुख़ारी किताब मनाक़िब अला बाब मनकब सअद बिन उबादा हदीस 3807)

हज़रत अबू उसीद अन्सारी रज़ि गवाही देते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अन्सार के बेहतरीन घर बनू नज्जार हैं। फिर बनू अब्द अशहल। फिर बनू हारिस बिन ख़ज़रज और फिर बनू साअदा और अन्सार के सब घरों में भलाई है। रावी अबू सलमा कहते हैं कि हज़रत अबू उसेद रज़ि ने कहा कि रसूलुल्लाह से यह रिवायत करने पर मुझे मुत्तहिम किया जाता है। अगर मैं ग़लत कह रहा होता तो ज़रूर अपनी क़ौम बनू साअदा से शुरू करता। यह बात हज़रत सअद बिन अबादह रज़ि तक पहुंची तो उन को भी बड़ा बुरा लगी। पहली भी जो रिवायत है इस में भी उनका इज़हार यह था कि हमें उन्होंने कहा कि हमें पीछे कर दिया गया है यहां तक कि हम चार में से आख़िरी हो गए हैं। उन्होंने कहा कि मेरे लिए अर्थात सअद बिन अबादह रज़ि ने कहा कि मेरे लिए मेरे गधे पर ज़ीन कसो। मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में जा रहा हूँ। उनके भतीजे सहल ने उनसे कहा, सअद बिन अबादह रज़ि के भतीजे ने कहा कि क्या आप इसलिए जा रहे हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात की तरदीद करें। जो आप ने तर्तीब ब्यान की है इस के बारे में बिना कारण जा के पूछें हालाँकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़्यादा जानते हैं। क्या आप के लिए यह काफ़ी नहीं कि आप चार में से एक हैं। अत: उन्होंने इरादा बदल दिया और कहा अल्लाह और इस का रसूल ज़्यादा जानते हैं और उन्होंने अपने गधे की ज़ीन खोलने का हुक्म दिया और वह ज़ीन खोल दी गई। यह भी सही मुस्लिम की हदीस है।

(सही मुस्लिम किताब फ़ज़ाइल अलसहाबा बाब फ़ी ख़ैर अन्सार हदीस 6425))

हिशाम बिन उर्वा ने अपने पिता से रिवायत की है कि हज़रत सअद बिन अबादह रज़ि यह दुआ किया करते थे कि हे अल्लाह मुझे प्रशंसा योग्य बना दे और मुझे शरफ़ और बुज़ुर्गी वाला बना दे। शरफ़ और बुज़ुर्गी बग़ैर अच्छे कामों के नहीं हो सकती। अच्छे काम ना हों तो फिर शरफ़ भी नहीं मिल सकता और बुज़ुर्गी भी नहीं हो सकती और अच्छे काम बग़ैर माल के नहीं हो सकते। हे अल्लाह थोड़ा मेरे लिए मुनासिब नहीं और न ही मैं इस में दरुस्त रहूँगा।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 461 सअद बिन उबादा प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1990 ई)

बहरहाल यह दुआ करने का उनका अपना एक अंदाज़ था। सही मुस्लिम की एक रिवायत है। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि से रिवायत है कि वह कहते हैं कि हज़रत सअद बिन अबादह रज़ि ने कहा हे रसूलुल्लाह अगर मैं अपनी बीवी के साथ किसी शख़्स को ग़लत हालत में पांऊ तो इस को हाथ ना लगाऊँ यहां तक कि मैं चार गवाह ले आऊँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ। इस पर उन्होंने कहा कि हरगिज़ नहीं। इस ज़ात की क़सम जिसने आप को हक़ के साथ मबऊस फ़रमाया है अगर मैं हूँ तो इस से पहले ही जल्दी से तलवार के साथ उस का

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

फ़ैसला कर दूं। कोई गवाही तलाश नहीं करूँगा बल्कि क़त्ल कर दूँगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया लोगों से कहा सुनो ! तुम्हारा सरदार क्या कहता है। वह बहुत ग़यूर है और फ़रमाया कि मैं इस से ज़्यादा ग़ैरत वाला हूँ और फिर फ़रमाया कि अल्लाह तआला मुझ से भी ज़्यादा ग़ैरत वाला है

(सही मुस्लिम किताबुल्लीआन हदीस 3763))

फिर उसी हवाले से मुस्लिम की ही एक और रिवायत भी है जो हज़रत मुग़ीरह बिन शुअबह रिज़ से रिवायत है। वह कहते हैं कि हज़रत सअद बिन अबादह रज़ि ने कहा अगर में किसी शख़्स को अपनी बीवी के पास देखूं तो उसे क़त्ल कर दूं और तलवार भी चौड़े रुख से नहीं धार के रुख से। यह बात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहुंची तो आप ने फ़रमाया कि क्या तुम सअद रज़ि की ग़ैरत पर ताज्जुब करते हो अल्लाह की क़सम मैं इस से ज़्यादा ग़ैरत मंद हूँ और अल्लाह मुझ से ज़्यादा ग़ैरत मंद है। अल्लाह ने अपनी ग़ैरत ही की वजह से बेहयाइयों को मना फ़रमाया है जो उनमें से ज़ाहिर हों और जो पोशीदा हों और कोई शख़्स भी अल्लाह से ज़्यादा ग़ैरत मंद नहीं और अल्लाह से बढ़कर कोई शख़्स माज़रत करने को पसंद नहीं करता। अल्लाह से ज़्यादा कोई ग़ैरत मन्द भी नहीं और अल्लाह जितना माज़रत को पसंद करता है, तौबा को पसंद करता है, माफ़ी को पसंद करता है कोई शख़्स इस में अल्लाह से ज़्यादा बढ़ नहीं सकता। आप ने फ़रमाया कि इसीलिए अल्लाह तआला ने रसूलों को बिशारत देने वाले और डराने वाले बना कर मबऊस फ़रमाया है। बिशारत भी देते हैं डराते भी हैं। और कोई शख़्स अल्लाह से बढ़कर प्रशंसा को पसन्द नहीं करता इस वजह से अल्लाह तआला ने जन्नत का वादा किया है

(सही मुस्लिम किताबुल्लईन हदीस 3764)

अल्लाह तआला की प्रशंसा, तारीफ़ बुराईयों से बचना है और फिर अल्लाह तआला ने इस वजह से जन्नत का भी वादा किया है अर्थात अल्लाह तआला सज़ा भी देता है तो जल्दी नहीं करता। इन्सान कह दे मैं ग़ैरत खा गया और जल्दी की। तौबा करने वाले को माफ़ भी फ़रमाता है और सिर्फ माफ़ ही नहीं करता बल्कि नवाज़ता भी है। अत: अल्लाह तआला के क़ानून से, आप ने फ़रमाया आगे ना बढ़ो। जो अल्लाह तआला के क़ानून हैं उस के अंदर रहो।

हदीस में एक रिवायत मस्नद अहमद बिन हंबल की है कि हज़रत सअद बिन अबादह रज़ि बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे फ़रमाया अमुक क़बीले के सदक़ों की निगरानी करो लेकिन देखना क़यामत के दिन इस हाल में न आना कि तुम अपने कंधे पर किसी जवान ऊंट को लादे हुए हो और वह क़ियामत के दिन चीख़ रहा हो। उन्होंने निवेदन किया हे रसूलुल्लाह फिर यह ज़िम्मेदारी किसी और के सपुर्द फ़र्मा दीजिए तो आप ने यह काम उनके सपुर्द नहीं किया।

(मस्नद अहमद बिन हंबल भाग 7 पृष्ठ 473 मस्नद सअद बिन उबादा हदीस 22828 प्रकाशन आलिमुल कुतुब बेरूत 1998 ई)

अर्थात निगरानी का फिर हक़ अदा करना होगा। इन्साफ़ करना होगा और किसी किस्म की ख़यानत नहीं होगी। अगर ख़यानत हुई, इन्साफ़ ना हुआ, उस का हक़ अदा ना हुआ तो फिर यह बहुत बड़ा गुनाह है और क़यामत के दिन उस का जवाब देना होगा।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दौर में छ: अन्सार ने क़ुरआन करीम जमा किया था जिनमें हज़रत सअद बिन उबादा भी थे।

(उसुदुल ग़ाबह,भाग 1 पृष्ठ 503 जारीय बिन मजमा,दारुल कुतुब अल्इलिमया ,बेरूत 2003 ई)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि इस बारे में फ़रमाते हैं कि

''अन्सार में से जो मशहूर हुफ़्फ़ाज़ थे उनके नाम ये हैं उबादा बिन सामित रज़ि। मुआज़ रज़ि। मुजमअ बिन हारिस हरज़ि। फ़ज़ला बिन उबेदरज़ि। मसलअ बिन मुख़ल्लद रज़ि। अबू दरदा रज़ि। अबू ज़ेद रज़ि। ज़ैद बिन साबित रज़ि। उबय्य बिन कअब रज़ि और सअद बिन अबादह रज़ि। उम्मे वरक़ह रज़ि। लिखते हैं कि ''तारीख़ से साबित है कि सहाबा रज़ि में से बहुत से क़ुरआन करीम के हाफ़िज़ थे।'

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन , अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 430)

बाक़ी इंशा अल्लाह। उनका यह थोड़ा सा हिस्सा रह गया है वह इंशा अल्लाह आइन्दा।

(अलफ़ज़ल इंटरनेशनल लन्दन 31जनवरी 2020 ई पृष्ठ 5 से 9)

☆ ☆ ☆

☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

होने के लिए एक ही रास्ता है या और भी रास्ते हैं। ख़ेमा के अंदर बाक़ायदा एक बैड का भी प्रबन्ध किया हुआ था। इस बारह में फ़ैमिली ने बताया कि हमारे एक मैंबर तकलीफ़ की वजह से ज़मीन पर नहीं लेट सकते इसलिए उन के लिए हम ने एक बैड का प्रबन्ध किया है।

प्राईवेट ख़ेमों के सेहन के एक तरफ़ एक हिस्सा प्राईवेट Caravan के लिए मख़सूस किया गया था। इन ख़ेमों और Caravan के इर्द-गिर्द फैंस लगाई गई है और गेट भी बनाए गए हैं और इस सेहन में रजिस्ट्रेशन, कार्ड की चैकिंग और स्कैनिंग के बाद ही दाख़िल हुआ जा सकता है

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ लजना जलसा गाह के इंतिज़ामों के मुआइना के लिए तशरीफ़ ले गए। लजना के लिए खाना खाने का प्रबन्ध और उनके बाज़ार का प्रबन्ध बाहरी खुले एरिया में मार्कीज़ लगा कर किया गया था जिसके नतीजा में मौजूद हालज़ में उनके जलसा गाह के लिए वसीअ जगह उपलब्ध हो गई है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने लजना के इंतिज़ामों का मुआइना फ़रमाया और उनके समस्त इंतिज़ामों का जायज़ा लिया और हिदायतों से नवाज़ा।

लजना के जलसा गाह में नाज़िमा आला के अधीन दस नायब नाज़िमा आला, 58 नाज़मात ,72 मुंतज़िमात, 386 नायब नाज़मात, ग्यारह इंचार्ज और 4698 मावनात ख़िदमत कर रही हैं

लजना जलसा गाह के इंतिज़ामों के मुआइना के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने MTA स्टूडियो का मुआइना फ़रमाया और MTA3 अलअरबिया की टीम से दया करते हुए बातचीत फ़रमाई।

इसके बाद हुज़ूर अनवर MTA की मार्की मैं तशरीफ़ ले गए जहां MTA के विभिन्न विभाग क़ायम किए गए हैं। यहां MTA के तहत विभिन्न प्राजेक्टस बनाए जा रहे हैं, ग्राफ़िक्स और ऐडीटिंग के विभाग भी इसी जगह काम कर रहे हैं।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने किताबों के स्टोर और स्टॉल का मुआइना फ़रमाया। यहां विभिन्न मेज़ों और स्टैंडज़ पर बड़े क्रम के साथ किताबें रखी गई थीं ताकि किताबें प्राप्त करने वाले लोग आसानी से अपनी अपनी वांछित किताबें प्राप्त कर सकें

नैशनल सैक्रेटरी इशाअत ने निवेदन किया कि नई किताबों में बराहीन अहमदिया चारों हिस्सों का जर्मन अनुवाद प्रकाशित हुआ है। इस के इलावा किताब Essence of Islam का भी जर्मन अनुवाद प्रकाशित हुआ है। हुज़ूर अनवर ने ये किताबें देखीं।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ इस हिस्सा में तशरीफ़ ले आए जहां विभिन्न विभागों के दफ़्तर क़ायम किए गए हैं। इन विभागों में विभाग वक़्फ़ नौ, रिश्ता नाता, विभाग IAAAE विभाग ह्यूमैनिटी फ़रस्ट, ख़ुद्दाम Cafe विभाग तालीम, जामिआ अहमदिया, अलफ़ज़ल इंटरनैशनल, विभाग तालीमुल-क़ुरआन, विभाग अमूरे आमा, विभाग वसीयत और विभाग जायदाद के दफ़्तर बनाए गए हैं।

हुज़ूर अनवर ने इंतिज़ामीया से इन सब दफ़्तरों के बारे में पूछा। हुज़ूर अनवर दया करते हुए "अलफ़ज़ल इंटरनैशनल' और "जामिआ अहमदिया' के स्टॉल पर तशरीफ़ ले गए। ख़ुद्दाम के स्टॉल का भी मुआइना फ़रमाया।

इस के बाद हुज़ूर अनवर "ह्यूमैनिटी फ़रस्ट जर्मनी' के स्टॉल पर तशरीफ़ ले गए और ह्यूमैनिटी फ़रस्ट का App लॉन्च किया और इस के विभिन्न फंक्शनज़ के बारे में इंचार्ज साहिब विभाग डाक्टर अतहर ज़ुबैर साहिब से पूछा। इंचार्ज साहिब ने बताया कि इस में ह्यूमैनिटी फ़रस्ट, ख़िदमत इन्सानियत और सामाजिक के कामों के बारे में हुज़ूर अनवर के इर्शादात और ख़ुत्बे डाले जाऐंगे। ख़िदमत इन्सानियत के बारे में से जो जो काम हो रहे हैं वे ज़ाहिर किए जाऐंगे जो लोग इन ख़िदमत के कामों के लिए फ़ंड देना चाहते हैं उन के लिए इस प्रोग्राम में पूरी मालूमात उपलब्ध होंगी। पूरी दुनिया में ह्यूमैनिटी फ़रस्ट के अधीन होने वाले प्रोग्रामों की रिपोर्ट भी इस में आया करेगी।

Sao Tome देश में हुकूमत ने ह्यूमैनिटी फ़रस्ट को हस्पताल के आरम्भ के लिए जो इमारत उपलब्ध की है इस की तस्वीरें भी यहां लगाई गई थीं। इस इमारत का मॉडल बना कर भी यहां रखा गया था। हुज़ूर अनवर ने ये तस्वीरें और इस इमारत को देखा।

चेयरमैन साहिब ह्यूमैनिटी फ़रस्ट जर्मनी ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में निवेदन किया कि एक साल पहले हुज़ूर अनवर ने हिदायत देते हुए फ़रमाया था कि दो लाख पच्चास हज़ार यूरो में हस्पताल बना दें। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया था अल्लाह तआला

कर देगा।

अब ख़ुदा तआला का फ़ज़ल ऐसा हुआ है कि साओ टोमे की हुकूमत ने हमें पाँच मिलियन डालर का हस्पताल दिया है जो पिछले आठ साल से बंद पड़ा था। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि यह तो कमाल हो गया है फिर तो अब आप दो लाख यूरो में काम शुरू कर देंगे।"

ह्यूमैनिटी फ़रस्ट ने एक किट तय्यार की है जो एक जैकेट Pen का सेट, नोट बुक,Pen होल्डर, वेट पेपर, वास्कट, वाल क्लाक, Sun गिलासज़ , कैप और एक जिनाह कैप पर आधारित है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए बाक़ायदा रक़म अदा कर के यह किट ख़रीदी और साथ ही इंचार्ज साहिब को हिदायत फ़रमाई कि Sao Tome देश से जो प्रतिनिधि आए हुए हैं उनको तोहफ़ा में दे दें।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ इस हिस्सा में तशरीफ़ ले गए जहां से MTA का बसीधा प्रसारण के इंतिज़ाम किए गए थे। तीन वैन मौजूद थीं जिनमें MTA के उप लिंक के लिए समस्त सामान और मशीनरी लगाई गई थी। एक वैन के द्वारा MTA के Live प्रोग्राम जलसा गाह से सीधा अप लिंक होंगे। दूसरी वैन से MTA1 और तीसरी वैन से MTA3 के प्रोग्रामों के प्रोग्राम होंगे। इन इंतिज़ामों का हुज़ूर अनवर ने जायज़ा लिया और विभिन्न मामलों के बारे में मुंतज़मीन से बातचीत फ़रमाई।

जलसा गाह के मेन हाल से बाहर एक मार्की लगा कर और विभिन्न केबिन बना कर जलसा सालाना के समस्त प्रोग्रामों और तक़ाररों का विभिन्न भाषाओं में Live अनुवाद का प्रबन्ध किया गया है। यहां ट्रांसलेशन के बीस केबिन लगाए गए हैं निम्नलिखित 13 भाषाओं में जलसा सालाना के समस्त प्रोग्रामों का अनुवाद होगा

अरबी, अल्बानियन, बंगला, बूज़नीन, बुल्गारियन, अंग्रेज़ी, फ्रैंच, जर्मन, इंडोनेशियन, रशियन, स्पेनिश, तरकश और उर्दू। इसके इलावा जलसा औरतों के ख़ुसूसी सैशन के लिए सात भाषाओं में अनुवाद का प्रबन्ध किया गया है। विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करने वाले मित्र अपनी मार्की से बाहर खड़े थे।

जलसा सालाना की डयूटियों का उद्घाटन आयोजन

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मर्दाना जलसा गाह में तशरीफ़ ले आए जहां प्रोग्राम के अनुसार जलसा सालाना की डयूटियों का उद्घाटन आयोजन था। समस्त नाज़िमीन अपने मुआवनीन और कारकुनों के साथ एक क्रम से बैठे हुए थे।

अफ़्सर जलसा सालाना , अफ़्सर जलसा गाह और अफ़्सर ख़िदमत ख़लक़ के इलावा नायब आफ़िसरान की संख्या 14 है, नाज़िमीन की संख्या 70 है, नायब नाज़िमीन की संख्या 251 है। जबकि मुंतज़मीन की संख्या 506 है और मुआवनीन की संख्या 7073 है। मुआविन ख़ुसूसी की संख्या 7 है। इस तरह सामूहिक तौर पर 7924 मर्द , ख़ुद्दाम डयूटियों के कर्तव्य अंजाम दे रहे हैं

आयोजन का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो प्रिय उवैस अहमद मलिक ने की और इस के बाद उस का जर्मन और उर्दू ज़बान में अनुवाद पेश किया। इस बाद 9 बज कर 13 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने कारकुनों से ख़िताब फ़रमाया

ख़िताब हुज़ूर अनवर स्थान मुआइना कारकुनान तथा इन्तज़ाम जलसा सालाना जर्मनी 2019 ई

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशह्हुद ताव्वुज़ और तसमिया के बाद फ़रमाया :कल से इंशा अल्लाह तआला जमाअत अहमदिया जर्मनी का जलसा सालाना शुरू हो रहा है। जलसा से कई हफ़्ता पहले आप लोग काम शुरू कर देते हैं। बल्कि कुछ विभाग तो कई महीने पहले शुरू कर देते हैं। जैसा कि मैं कई बार पहले भी कह चुका हूँ अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अब जो बड़ी जमाअतें हैं जिन में जर्मनी भी शामिल है उनके कारकुनान इस क़दर तर्बीयत पा हो चुके हैं उनकी ऐसी ट्रेनिंग हो चुकी है कि बड़ी आसानी से थोड़े वक़्त में ही बड़े अहम काम सरअंजाम दे लेते हैं। इस बार कुछ दिक्कतें थीं ,मुश्किलें थीं। मुझे बताया गया कि आख़िरी वक़्त में यह हाल मिलेगा और 36 घंटे में इस को तय्यार करना होगा। अब अफ़्सर जलसा गाह को 36 घंटे में इस की तय्यारी की बड़ी फ़िक्र थी कि किस तरह तय्यार होगा। लेकिन अल्लाह तआला के फ़ज़ल से बड़ी हिम्मत से कारकुनों ने और जो दूसरी टीमें हैं कंपनी वाले भी आते होंगे उन्होंने इस काम को सरअंजाम दिया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया एक वक़्त था, कहा जाता था कि अमुक व्यक्ति हमारे कारकुनों मैं बड़ा जिन्न है और बड़े बड़े काम कर लेता है अब मैंने देखा है यहां भी और यू के में भी कुछ और जगह भी। अल्लाह तआला ने जमाअत को जिन्नों की फ़ौज प्रदान कर दी है। कुछ तोहम परस्त जो अहमदी नहीं शायद मेरी बात सुनकर ख़्याल करें कि शायद जलसा गाह में जिन्नों की फ़ौज फिर रही होगी और कहीं उन्हें नुक़्सान ना पहुंचा दे। लेकिन हमारे जिन अल्लाह तआला के फ़ज़ल से फ़ायदा पहुंचाने वाले हैं। अल्लाह के लिए काम करने वाले हैं और इस के लिए हर क़ुर्बानी के लिए तय्यार हैं। और कुछ लोग ऐसे जिनकी टेक्निकल बैकग्राऊंड नहीं या इस तरह वे सकिल नहीं वे महारत नहीं जो होनी चाहिए उस के बावजूद बड़े माहिराना अंदाज़ में काम सरअंजाम दे देते हैं। तो ये आप लोगों पर अल्लाह तआला के फ़ज़ल हैं कि अल्लाह तआला मदद करता है और वह काम जिस के लिए दूसरे लोगों को बड़ी रकमें ख़र्च करनी पड़ती हैं और बड़े स्पैशलिस्ट बुलाने पड़ते हैं ,अल्लाह तआला हमारे मामूली कारकुनों के द्वारा से और बड़े सस्ते ख़र्च के साथ वे काम सरअंजाम देने की हमें तौफ़ीक़ दे देता है। अत: ये अल्लाह तआला का शुक्र है ,अल्लाह तआला का फ़ज़ल है जिसका शुक्राना हम में से हर एक को अदा करना चाहिए। अल्लाह तआला का शुक्रगुज़ार होना चाहिए कि वह हमें तौफ़ीक़ दे रहा है कि जमाअत के लिए हम अपने वक़्त और अपनी सलाहीयतों को काम में लाएंगे। अल्लाह तआला आप सबको जलसे के इन तीनों दिनों में और इस के बाद वाइंडि अप में भी इस काम को अहसन रंग में सरअंजाम देने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और बिना किसी दिक़्क़त के जो समेटने का काम है वह भी सरअंजाम पा जाए। उस के लिए जो टीमें मुक़र्रर हैं उनको भी अल्लाह तआला तौफ़ीक़ दे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि इन दिनों में मैं यह हमेशा याददहानी करवाता हूँ, अब फिर याद-दहानी करवा रहा हूँ। यह ना समझें कि काम की वजह से हमारी नमाज़ें माफ़ हो गई हैं। वक़्त पर नमाज़ें अदा करने की समस्त कारकुन कोशिश करें और उनके आफ़िसरान , नायब आफ़िसरान विभाग इस बात को यक़ीनी बनाएँ कि समस्त मुआविन बच्चे ख़ादिम जो भी हैं वे नमाज़ें वक़्त पर अदा करें और दूसरी बात ख़ुश आचरणी है। ख़ुश आचरणी की बार-बार मुझे तलक़ीन करनी पड़ती है ताकि भूल ना जाएं। प्राय तो यह स्तर बहुत बेहतर हो चुका है लेकिन यहां मर्दाना जलसा गाह में भी और औरतो के जलसा गाह में भी या दूसरी डयूटियों में जो कारक़ुनात हैं उनकी डयूटी खाना खिलाने पर है , मेहमान-नवाज़ी पर है या नज़ाफ़त पर है। टायलट इत्यादि की सफ़ाई इत्यादि पर है या किसी भी तरह के तर्बीयती मआमले में है ,डिसिप्लिन पर है। उनमें से कुछ लोगों पर ज़्यादती कर जाती हैं। कुछ बूढ़ी औरतें हैं उनसे सही तरह पेश नहीं आतीं। मजबूरियाँ हैं , कारक़नात की भी मजबूरियाँ हैं। कई बार रश पड़ जाता है। टॉइलेटस Available नहीं तो कारक़नात या कारकुन वह मजबूर हैं ,वे भी किया करें। लेकिन अगर मेहमान या कोई भी बड़ी उम्र का व्यक्ति कोई ग़ुस्सा का इज़हार भी कर दे तो आप लोगों को ख़ुश आचरणी का मज़ाहिर करना चाहिए। और किसी को किसी ग़लत किस्म के जवाब ना दें जिससे उस का दिल दुखता हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि अत: इस बात को यक़ीनी बनाएँ कि हमने जहां इतने जोश और वलवले से जलसा से पहले काम किए और विभिन्न विभागों में काम किए , इस जलसा के प्रबन्ध को आसान बनाने के

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

लिए और वक़्त पर ख़त्म करने के लिए। इसी तरह जलसे के दिनों में भी , बावजूद थकावट के, बावजूद कुछ मजबूरियों के ख़ुश-आचरणी का मुज़ाहरा करते हुए बाक़ी दिन भी गुज़ारने हैं और मेहमानों से ख़ुश-आचरणी से पेश आना है और हर एक से आपका सुलूक उत्तम होना चाहिए। अल्लाह तआला आप सबको उस की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। अब दुआ कर लें।

ख़िताब के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। हुज़ूर का यह ख़िताब 9 बजकर 22 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले आए। इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार दस बजे हुज़ूर अनवर ने मर्दाना जलसा गाह में तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब और इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की आदयगी के बाद हुज़ूर अनवर अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले आए। जलसा सालाना के दिनों में हुज़ूर अनवर का क़ियाम जलसा गाह के अंदर ही एक रिहायशी हिस्सा में है।

5 जुलाई 2019 (दिनांक जुम्अतुल मुबारक)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 4 बजकर 15 मिनट पर मर्दाना जलसा गाह में तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की विभिन्न दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्त रहे।

आज अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत अहमदिया जर्मनी के 44 वें जलसा सालाना का आरम्भ हो रहा था और आज जलसा सालाना का पहला दिन था। प्रोग्राम के अनुसार दोपहर एक बज कर 55 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ध्वजारोहण के लिए जलसा गाह के चारों हालों के बीच स्थित एक खुले लॉन में तशरीफ़ ले आए। हुज़ूर अनवर ने लिवाए अहमदियत लहराया जबकि अमीर साहिब जर्मनी ने क़ौमी झण्डा लहराया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई

एम टी ए इंटरनेशनल की यहां जलसा गाह से सीधा प्रसारण सुबह से ही शुरू हो चुकी थीं। झण्डा लहराने का यह आयोजन भी दुनिया-भर में सीधा प्रसारित हुआ। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मर्दाना जलसा गाह में पधारे और ख़ुत्बा जुम्अ: इरशाद फ़रमाया। इस के साथ जलसा का उद्घाटन हुआ। हुज़ूर अनवर का यह ख़ुत्बा जुम्अ: तीन बजे तक जारी रहा। यह ख़ुत्बा जुम्अ: एम टी ए इंटरनेशनल पर सीधा प्रसारित हुआ। ख़ुत्बा जुम्अ: का निम्नलिखित भाषाओं में अनुवाद का प्रबन्ध किया गया था। अरबी ,अल्बानियन , बंग्ला , बूज़नीयन , बुल्गारियन , अंग्रेज़ी , फ्रेंच , जर्मन , इंडोनेशियन , रशियन , स्पेनिश और तरकश।

ख़ुत्बा जुम्अ: के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ जुम्अ: के साथ नमाज़ अस्र जमा कर के पढ़ाई। रेडियो एफ़ एम पर भी हुज़ूर अनवर का ख़ुत्बा लाईव प्रसारित हुआ। इस रेडियो की रेंज दो किलो मीटर है। जलसा सालाना के समस्त प्रोग्राम भी इस रेडियो के द्वार प्रसारित हो रहे हैं। इसके इलावा दूसरी सुविधा एप की भी है। जलसा सालाना जर्मनी की प्रोग्राम उर्दू और जर्मन भाषाओं में जलसा रेडियो में भी सुने जा सकते है। इसी तरह जिसके पास इंटरनेट की सुविधा नहीं उस के लिए इस में यह सुविधा मौजूद है कि वह फ़ोन के द्वारा नम्बर मिला कर जलसा के प्रोग्राम अपने फ़ोन पर भी सुन सकता है।

प्रैस कान्फ्रैंस

नमाज़ जुम्अ: तथा अस्र की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कान्फ्रैंस रुम में तशरीफ़ ले गए जहां प्रैस कान्फ्रैंस का आयोजन हुआ। जर्मनी ,स्लोवेनिया और मेसेडोनिया से आने वाले इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के प्रतिनिधियों और पत्रकार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के आने की प्रतीक्षा में थे। 3 बज कर 10 मिनट पर प्रैस कान्फ्रैंस शुरू हुई।

एक पत्रकार के सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया देखें हमारा जलसा हमारी जमाअत के मेम्बरों के लिए है। इस का मक़सद यह है कि अहमदी रुहानी तौर पर तरक़्क़ी करें, अपने आचरण बेहतर करें और ख़ुदा तआला के अधिकार और बन्दों के अधिकार को समझें कि किस तरह से हम यह अधिकार बेहतरीन रंग में अदा कर सकते हैं

इसके बाद एक सवाल इस्लामोफोबिया के हवाले से हुआ। इस के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मुझे तो नहीं पता कि इस्लामोफोबिया क्यों होता है। मुसलमानों में दो किस्म के मुसलमान पाए जाते हैं कुछ दहश्तगर्द और उग्रवादी हैं जो अपने ही देशों में फ़साद और समस्याएँ पैदा कर रहे हैं जिसका प्रभाव मुस्लिम देशों से बाहर भी पहुंच रहा है। फिर दूसरी किस्म के मुसलमान भी हैं। जैसा कि हम हैं , जो हमेशा इस्लाम की वास्तविक शिक्षा का प्रचार कर रहे होते हैं। जिसमें यह बताया जाता है कि एक मुसलमान के क्या कर्तव्य हैं। और अल्लाह तआला के क्या अधिकार हैं और इस की मख़लूक़ के क्या अधिकार हैं और किस तरह से बेहतरीन रंग में हम ये अधिकार अदा कर सकते हैं। अत: अगर आप इस्लाम के बारे में हमारे दृष्टिकोण को देखें तो फिर किसी किस्म का इस्लामोफोबिया पैदा नहीं होना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इस्लामोफोबिया असल में क्यों पैदा होता है ?आप लोगों में से ही जो कि पत्रकार और निबन्धकार हैं ,कहते हैं कि इन उग्रवादी मुसलमानों की बहुत ही मामूली संख्या है जो मुश्किलें और फ़साद पैदा कर रहे हैं इसलिए आप उसे इस्लामोफोबिया नहीं कह सकते। हाँ ये कह सकते हैं कि यह फ़साद कुछ उग्रता पसन्द मुसलमानों ने पैदा किया है। मेरे निकट तो कोई मसला होना नहीं चाहिए। अगर आप इस्लाम को हमारी नज़र से देखें तो फिर आपको इस्लाम में कुछ भी ग़लत नज़र नहीं आएगा। अत: जब कोई ग़लत चीज़ नहीं होगी तो इस्लामो फोबिया भी नहीं होगा। हां कुछ ऐसे लोग ज़रूर हैं जो दुनिया में फ़साद कर रहे हैं और वे मुसलमानों में से भी हैं। और दूसरों में से भी हैं। हर साल हज़ारों लोग अमरीका में क़त्ल किए जाते हैं तो कौन है जो उन्हें क़त्ल करते हैं ?ये तो उन्हीं के देश के अमरीकन लोग ही हैं। यही चीज़ मुस्लिम देशों में भी होती है। लेकिन इस वक़्त उन लोगों के बारे में जो अपने ही देश में अपने ही लोगों को क़त्ल कर रहे होते हैं आप यह तो नहीं कहते कि यह लोग जो भी कर रहे हैं ईसाईयत की वजह से कर रहे हैं। अत: मुसलमानों में उग्रवाद पसन्द लोगों के कर्मों को इस्लाम की तरफ़ मन्सूब नहीं करना चाहिए।

एक पत्रकार जिनका सम्बन्ध मेसेडोनिया से था उन्होंने सवाल किया कि आपका जलसा सालाना के अवसर पर पूरी दुनिया के लिए क्या उमूमी पैग़ाम है ? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :कि यह तो मैं अपने ख़ुत्बा जुम्अ: में वर्णन कर चुका हूँ कि हमें ऐसा मुसलमान बनना होगा जो अच्छे आचरण अपनाने वाले हों। हमें चाहिए कि हम अपने ख़ालिक़ और इस की मख़लूक़ के अधिकार पूरे करने वाले हों और आपस में अमन और प्यार मुहब्बत से रहने वाले बनें।

इसके बाद बोसनिया से आने वाले एक पत्रकार ने सवाल किया कि यूरोप में कुछ लोगों को पूर्वी देशों जैसे पाकिस्तान इत्यादि से आने वाले लोगों से यह ख़तरा होता है कि वे इस योरुपी समाज में रह कर भी अपने ही कल्चर और रिवायतों की हिफ़ाज़त करते हैं और योरूपी रिवायतों को नहीं अपनाते। इस बारे में हुज़ूर अनवर का क्या ख़्याल है ? इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि इस के बारे में तो वही वर्णन कर सकते हैं जिन्हें ख़तरा है। बाक़ी यह है कि जो पाकिस्तान से आते हैं या और भी लोग जो अपनी वैल्यूज़ की हिफ़ाज़त करना चाहते हैं जो अपने मज़हब की हिफ़ाज़त करना चाहते हैं तो वह इस पर क़ायम रहते हैं। अगर वे अपने मज़हब को प्रैक्टिस करते हैं तो इस बारे में तो यूरोप को इस से कोई ख़तरा नहीं होना चाहिए।

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

अगर यूरोपीयन लोगों को इस से ख़तरा है तो फिर मेरे ख़्याल में तो एक ग़लत ख़तरा है। क्योंकि इस का तो यह अर्थ है कि उनको अपने आप पर यक़ीन और भरोसा नहीं है कि एक छोटी से कम्यूनिटी या थोड़े से लोग या एमीग्रंटस उन लोगों पर ज़्यादा अनफ़िलोइनस कर जाऐंगे और ये लोग शायद आउट नम्बर हो जाएं और मुसलमान ज़्यादा हो जाएं। अत: कभी किसी देश में एमीग्रंटस इतने ज़्यादा नहीं आ सकते कि स्थानीय लोगों को वे आउट नंबर कर दें। अगर लोकल किसी मज़हब के मामला में आउट नम्बर होते हैं तो इस मज़हब की वजह से होते हैं। जिस तरह क्रिसचेनेटी दुनिया में फैली थी तो क्रिसचेंटी ने हर देशों के कल्चर को या उनकी सभ्यता को,इन देशों की आबादियों को आउट नम्बर किया। ऐसा तो नहीं था कि एमीग्रंटस ने आकर क्रिसचेंटी फैलाई। अगर यह मज़हब की हिफ़ाज़त करते हैं तो कोई फ़िक्र की बात नहीं है। अगर यह लोग अपने मज़हब की हिफ़ाज़त नहीं करते तो उनको फ़िक्र करनी चाहिए। उनको चाहिए कि वह अपने मज़हब की हिफ़ाज़त करें और अपने मज़हब की इक़दार को क़ायम रखें। अगर ये लोग अपनी शिक्षाओं और इक़दार को क़ायम रखेंगे तो मुसलमान कभी उन पर इनफ़िलोइनस नहीं कर सकेंगे। इसलिए ख़तरे वाली कोई बात है।

आख़िर पर एक औरत ने यह सवाल किया कि जमाअत में औरत और मर्द का किस हद तक फ़र्क़ है और वह क्या किरदार अदा करते हैं ?इस के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :कि आपको एक बुनियादी बात हमेशा याद रखनी चाहिए कि हम एक मज़हबी जमाअत हैं और हम ने मज़हबी शिक्षाओं पर अनुकरण करना है। हम ने अपनी मुक़द्दस किताब की पैरवी करनी है जो कि क़ुरआन करीम है। हम ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत और बातों की पैरवी करनी है। और अगर आप पैरवी नहीं करते तो इस का अर्थ है कि आप बुनियादी शिक्षाओं से मुंह फेर रहे हैं। दूसरी बात यह है कि इस्लाम ने आरम्भ से ही औरतों के अधिकार क़ायम किए हैं। एक सौ साल पहले भी यूरोप में औरतों को अधिकार प्राप्त नहीं थे। औरत को यह हक़ प्राप्त नहीं था कि वह अपने माँ बाप का विरसा प्राप्त करे। और न ही उसे वोट देने का हक़ था। इसके इलावा भी कई बातें हैं। इस्लाम ने औरत के लिए विरासत का हक़ क़ायम किया और उसे अपने पति से खुलअ लेने का भी हक़ दिया , अगर वे उस के साथ ख़ुश नहीं है। इस्लाम ने यह बात क़ायम की कि औरत अपनी मर्ज़ी से शादी कर सकती है लेकिन अपने माता पिता के साथ मश्वरा करने के बाद। और इस के इलावा कई और आदेश हैं जिनके द्वारा से औरतों के अधिकार क़ायम किए गए हैं। और यही चीज़ें हमारी जमाअत में पाई जाती हैं। आप देख सकती हैं कि औरतों का अलग हाल है जहां उन्हें सारी सहूलियतें दी गई हैं। कल वे अपना प्रोग्राम आयोजित करेंगी, जहां औरतें ख़िताब करेंगी और मैं भी वहां औरतों की तरफ़ ख़िताब करूंगा। तो इस्लाम ने बता दिया है कि ये मर्द की ज़िम्मेदारी है और ये औरत की। ये काम हैं जो मर्दों ने करने हैं और ये काम हैं जो औरतों ने करने हैं। मेरी फ़िलासफ़ी है कि अगर औरतें मुर्दों की सरपरस्ती के बिना काम करें तो ज़्यादा बेहतर रंग में काम कर सकती हैं। जो औरत आपके साथ बैठी हुई है वे मर्दों से कई दर्जा बेहतर है।

3 बजकर 23 मिनट पर ये प्रैस कान्फ्रैंस ख़त्म हुई और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए

सेनेगाल के वफ़द की हुज़ूर अनवर से सामूहिक मुलाक़ात

आज शाम सेनेगाल , माईवटी आई लैंड और लिथोनिया से आने वाले वफ़ूद और मेहमानों की सामूहिक मुलाक़ात का प्रोग्राम था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ आठ बजे मुलाक़ात हाल में पधारे। सबसे पहले सेनेगाल से आने वाले वफ़द ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य सेनेगाल से 9 लोगों पर आधारित वफ़द जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हुआ। मेहमानों में सेनेगाल से दूसरे बड़े शहर "अम्बूर"के कमीशनर मिस्टर सीयर नदाओ ,डायरेक्टर जनरल ऐस्टैबलिशमैंट , सेहत विभाग के मिस्टर मोर्डियाओ ,डाईरेक्टर रेडियो डॉफ उम्र साईद वसा हुब्ब और सैक्रेटरी जनरल उलमा कौंसल मुहम्मद हबीब गुना साहिब शामिल थे। वफ़द के मेम्बरों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर बारी बारी अपना परिचय कराया

सेनेगाल से आने वाले मेहमान सीयर नदाओ साहिब जो कि अपने इलाक़ा में कमिशनर हैं ने निवेदन किया मैं हुज़ूर अनवर से मिलकर बहुत ख़ुश हूँ और हुज़ूर के आज के ख़ुत्बा जिस में मुहब्बत और तौहीद की शिक्षा थी, मैं इस से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। अगर मैं यह जलसा ना देखता और हुज़ूर अनवर से ना मिलता तो यक़ीनन समझता हूँ कि मैं अपनी ज़िन्दगी में एक बहुत बड़ी कमी महसूस करता और आज मैं यह समझता हूँ कि हुज़ूर को मिलकर मेरी ज़िन्दगी का मिशन मुकम्मल हो गया है। मैं यह बात स्पष्ट और हर जगह कह सकता हूँ कि हुज़ूर अनवर एक रुहानी आदमी ही नहीं बल्कि वह यक़ीनन ख़ुदा के निर्धारित इन्सान हैं। वह इस दुनिया के नहीं हैं। ये बातें वर्णन कर के उनकी आँखों में आँसू थे। कहने लगे मुझ में ताक़त नहीं कि मैं इतनी बड़ी हस्ती के बारह में कुछ सकूं।

उन्होंने अपने वफ़द की तरफ़ से हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में किश्ती का तोहफ़ा पेश किया और कहा कि यह किश्ती अमन की किश्ती है। मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं की किश्ती है। अब जो इस में सवार होगा वही अमन पाएगा। और ये अहमदियत की किश्ति है और किश्ती का तोहफ़ा देने का एक दूसरा अर्थ ये भी था कि हमारे देश की अर्थ व्यवस्था इस से जुड़ी है। अत: हमारे देश के लिए ख़ास दुआ करें। इसी तरह उन्होंने कहा कि हम हुज़ूर अनवर को सेनेगाल आने की दावत देते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि मैं वक़्त निकालूँगा। इंशाअल्लाह

सेनेगाल से आने वाले एक मेहमान डाक्टर मोर जाओ साहिब जो कि डायरेक्टर जनरल ऐस्टैबलिशमैंट सेहत विभाग हैं और सेनेगाल के समस्त हस्पतालों के इंचार्ज हैं , कहने लगे हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात हमारे लिए बहुत बड़े सौभाग्य की बात है। जमाअत ने वहां हस्पताल खोला है। वह बहुत ही उच्च कदम है। और कैन्डा वालों ने इस हस्पताल के लिए सामान भिजवाया है। इस के लिए भी में हुज़ूर अनवर का शुक्रगुज़ार हूँ। इसती तरह अन्य हस्पताल और सेहत और शिक्षा के विभाग में सेनेगाल ज़रूरतमंद है। विशेष रूप से माँ और बच्चे की केयर के हस्पताल की ज़रूरत है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। हम जायज़ा लेंगे। इसी तरह फ़रमाया कि हम जब किसी तरफ़ दोस्ती का हाथ बढ़ाते हैं तो पीछे नहीं हटते। इस पर सब डेलीगैशन ने एक ज़बान हो कर हुज़ूर अनवर की तरफ़ हाथ बढ़ाते हुए कहा कि हमारे तरफ़ से भी ये हाथ कभी पीछे नहीं होगा

महोदय ने अपनी भावनाओं को प्रस्तुत करते हुए कहा :मैंने दुनिया के बहुत से देशों देखे हैं। मज़हबी और स्यासी इज्तिमा भी देखे हैं। अमरीका यूरोप सब जगहों पर गया हूँ लेकिन आज तक ऐसा निज़ाम , ऐसा वास्तविक इस्लाम और इस्लाम की ऐसी तस्वीर इस से पहले नहीं देखी। ऐसी इताअत कभी नहीं देखी जो मैंने यहां लोगों मैं देखी है और ख़िलाफ़त से ऐसी मुहब्बत , मैं यह स्पष्ट रूप से कह सकता हूँ कि दुनिया में किसी जगह भी कोई अपने स्यासी या मज़हबी लीडर से ऐसा प्यार नहीं करता जितना यहां मैंने अपने ख़लीफ़ा से लोगों को करते देखा है। मैं इस सच्चाई को स्वीकार करता हूँ।

डाक्टर मौजाओ साहिब और उनके साथ कमिशनर सिएर नदाओ साहिब ने निवेदन किया कि हम दिल से इस सच्चाई को क़बूल करते हैं और जो हमने देखा यह एक ऐसी सच्चाई है कि जिसको कोई भी रद्द नहीं कर सकता। और हमारे दिल आज से आप के साथ हैं। जो हमने देखा और आपसे सुना है खासतौर पर ख़िताब में यह कभी दिल से भूलने वाला नहीं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया असल चीज़ तक़्वा है और इन्सान को हमेशा तक़्वा से काम लेना चाहिए। अल्लाह तआला आपके साथ हो

सेनेगाल से आने वाले डॉफ उम्र साईदो साहिब जो कि एक रेडियो के डायरेक्टर हैं ने निवेदन किया। मैं रेडियो का डायरेक्टर हूँ। जमाअत का हर जुम्अ: को प्रोग्राम होता है और हुज़ूर अनवर का ख़ुत्बा जुम्अ: फ्रेंच भाषा में लाईव प्रसारित होता है। यह मुलाक़ात मेरे लिए और मेरी फ़ैमिली के लिए ज़िन्दगी का एक क़ीमती सरमाया है जिसको मैं कभी भी भूल नहीं सकता। मैं हमेशा हमेशा के लिए ख़ुदा के ख़लीफ़ा का धन्यवादी हो गया हूँ। और हमेशा हमेशा के लिए उस का हो गया हूँ। क्योंकि जब मैंने उन्हें देखा है और जब मैंने यह सच्चाई देखी है इसके बाद अब मेरे लिए रास्ता नहीं कि मैं उनका ना हूँ। मैं उनका हूँ। मैं कहीं भी हूँ दुनिया में किसी जगह भी हूँ आज के बाद ख़ुदा के ख़लीफ़ा का हूँ।

मैं हुज़ूर से अपने अपनी फ़ैमिली के लिए दुआ की दरख़ास्त करता हूँ। हुज़ूर अनवर के ख़ुत्बा का मेरे दिल पर बहुत प्रभाव है। इसी तरह हमारे देश में पेट्रोल और गैस निकली है। इस के लिए भी दुआ की दरख़ास्त है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मैंने घाना के वफद को भी यह बात कही थी कि अगर आप इन्साफ़ के साथ तक़सीम ना करें और करप्शन हो तो समस्याएँ पैदा होती हैं। तेल से तो नाईजीरिया भी माला-माल है लेकिन वहां इतनी ग़ुर्बत है कि लोग कचरे से उठा कर भी खा रहे होते हैं इसलिए संसाधनं की तक़सीम इन्साफ़ के साथ होनी चाहिए।

इस के बाद मुहम्मद हबीब गिना साहिब सैक्रेटरी जनरल उलमा कौंसल ने अपना

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 13 February 2020 Issue No.7

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

परिचय कराया और कहा कि मैं अंबोर की बड़ी मस्जिद का इमाम हूँ और आपका ममनून हूँ। आपने जो ख़ुत्बा दिया , तौहीद , मुहब्बत और भाईचारे की शिक्षाक्ष दी असल इस्लाम यही है। आप जो काम मुहब्बत और भाईचारा का और इस्लाम की तरक़्क़ी का और उम्मत को मुत्तहिद करने का कर रहे हैं आज इस्लाम को इस की बहुत ज़रूरत है। इसी तरह अगर हुज़ूर इरशाद फ़रमाएं तो जहां यूके में भी हुज़ूर रहते हैं वहां भी आऊं और देखूं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया यूके का वीज़ा अगर मिल जाए तो ज़रूर आएं। वीज़ा एंबेसी ने देना है। बाक़ी प्रबन्ध हमारे ज़िम्मा है। मुलाक़ात के आख़िर पर वफ़द के सभी मेंबरों ने हुज़ूर अनवर ने हाथ मिलने का सौभाग्य प्राप्त किया और तस्वीरें बनवाईं

सेनेगाल के वफ़द की यह मुलाक़ात 8 बजकर 25 मिनट तक जारी रही

मायूट आईलैंड के वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इस के बाद मायूट आईलैंड से आने वाले वफ़द ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात की सौभाग्य पाई। मायूट आईलैंड इस साल 9 लोगों पर आधारित वफ़द आया था जिन में दो पति पत्नी अहमद सलीम साहिब और मुहतरमा ईलाद चक्करयन साहिबा का सम्बन्ध देश की सियासत से था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के पूछने पर अहमद सलीम साहिब ने बताया कि वह पेशे के लिहाज़ से एक वकील और सियास्तदान भी हैं। उनके साथ उनकी पत्नी भी सियासत में हिस्सा लेती हैं

मायूट के मुबल्लिग़ ने निवेदन किया कि हम वहां अपनी मस्जिद और एक लायब्रेरी बनाना चाहते हैं जिस के लिए सलीम साहिब हमारी बहुत मदद कर रहे हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हमारी कम्यूनिटी हर जगह मानव जाति की ख़िदमत कर रही है हम कोई यूरोपीयन कम्यूनिटी नहीं हैं। एक मज़हबी कम्यूनिटी हैं। इस्लाम का पैग़ाम पहुंचा रहे हैं। आप वहां जो हमारी मदद कर रहे हैं अपनी फ़ीस लेते हुए इस को समक्ष रखना है हम मानव जाति की भलाई और ख़िदमत के लिए काम कर रहे हैं

वफ़द में एक दोस्त लाबीवन यूसुफ़ साहिब अपनी फ़ैमिली के साथ शामिल थे। महोदय वहां के इबतिदाई अहमदियों में से हैं और इस वक़्त जमाअत के सैक्रेटरी माल भी हैं। महोदय ने निवेदन किया मैं अपने ख़ानदान में पहला अहमदी हूँ। अहमदी होने से पहले मेरे पास कुछ ना था। अहमदियत क़बूल की तो अहमदियत की बरकत से ख़ुदा तआला ने मुझे काम भी प्रदान किया , घर भी प्रदान किया और बीवी बच्चे भी प्रदान किए।

मुबल्लिग़ इंचार्ज ने निवेदन किया कि उनके माता पिता उनको काफ़िर कहते हैं और उनकी बहुत मुख़ालिफ़त करते हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने उनको नसीहत फ़रमाई कि आप अपने पिता के लिए दुआ क्या करें कि ख़ुदा तआला उनको हिदायत दे। महोदय ने निवेदन किया कि उनके यहाँ जब बच्चे की पैदाइश हुई थी तो डाक्टरों का कहना था कि बच्चा अपाहिज है। यह भविष्य में न तो बैठ सकेगा ना खड़ा हो सकेगा और न ही देख पाएगा। अत: उन्होंने हुज़ूर की ख़िदमत में दुआ के उद्देश्य से तहरीर किया। इस के बाद अल्लाह तआला के फ़ज़ल से बच्चे की नशो नुमा मोजज़ाना रंग में हुई और वही बच्चा अब बैठ भी सकता है और खड़ा भी हो सकता है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने इस बच्चे के सर पर हाथ फेरा और फ़रमाया अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाएगा।

यूसुफ़ लाबीवन साहिब ने मुलाक़ात के बाद बताया कि यद्यपि कि बच्चा बैठ सकता था और खड़ा भी हो सकता था लेकिन इस की आँखों में टोड़ापन था लेकिन मुलाक़ात के बाद हुज़ूर अनवर के दस्त मुबारक फेरने के बाद अल्लाह तआला ने मोजज़ाना रंग में उसकी आँखें भी ठीक कर दीं और इस का टेड़ापन भी दूर कर दिया। अलहमदो लिल्लाह

मायूट आईलैंड के वफ़द की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात 8 बजकर 40 मिनट तक जारी रही।

लेथोनिया के वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार देश लेथोनिया से आने वाले वफ़द ने मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। लेथोनिया से 58 लोगों पर आधारित वफ़द जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हुआ। इस में 46 ग़ैर अहमदी , ग़ैर मुस्लिम लोगों थे जबकि 12 अहमदी लोगों थे

वफ़द में शामिल एक दोस्त ने निवेदन किया कि वह लेखक हैं और एक रिसाला भी निकालते हैं उन्होंने निवेदन किया मेरा मक़सद यह है कि मैं इन्सानियत के लिहाज़ से लिखूँ ताकि लोग क़रीब आएं। हुज़ूर के ख़ताबों से इंतिख़ाब कर के भी लिखता हूँ ताकि लोग इस्लाम के क़रीब आएं और उनको इस्लाम की वास्तविक शिक्षा का पता चले। मैंने पहला रिसाला अहमदिया के बारे में से निकाला है। इस में जमाअत का परिचय , ख़ुलफ़ाए अहमदियत का परिचय और जलसा सालाना के बारे में से और जमाअत जो ख़िदमतें कर रही है इस बारे में से तफ़सील से लिखा है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इस को अब लेथोनिया में फैलाएं। आप तो सारे देश में जमाअत का परिचय करवा रहे हैं इस को अब सारे देश में फैलाएं। इस तरह वहां के मुबल्लिग़ की सुस्ती भी दूर हो जाएगी और इस को भी काम करना पड़ेगा

लेथोनिया से पतरस यानो लियोन्स साहिब ने अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए निवेदन किया। जलसा सालाना पर आने से पहले इस्लाम के बारे में मेरा विचार कुछ अच्छा ना था। लेकिन जलसा में शामिल होने के बाद इस्लाम के बारे में मेरे भावनाएं बहुत सकारात्मक हो गई हैं। मुझे जलसा में इस बात का एहसास हुआ कि मुसलमान अपने अक़ीदे के साथ बहुत संजीदा हैं। बल्कि में यह कहना चाहूँगा कि ईसाईयों की निसबत बहुत ज़्यादा संजीदा हैं। आपके ख़लीफ़ा बहुत प्रभावित करने वाली शख़्सियत हैं। और लोगों से बहुत खुल कर बात करते हैं।

लेथोनिया से अदनस बराज़ा वसकस साहिब कहते हैं कि मैं हमेशा से इस्लाम का बतौर मज़हब सम्मान करता था। यहां आकर एहसास हुआ कि इस्लाम अमन और बर्दाश्त का मज़हब है। ख़लीफ़ा साहिब की शख़्सियत से बहुत प्रभावित करने वाली है।

रीता अपसी गी अने साहिबा ने वर्णन किया कि जलसे का हर दिन एक नया तजुर्बा था। जलसे के दोस्ताना माहौल ने बहुत प्रभावित किया। ख़लीफ़ा बहुत प्रभावित करने वाली शख़्सियत के मालिक हैं। आप धैर्य के साथ हर किसी के सवाल को सुनते और जवाब देते हैं। और आपकी मज़ाक़ की हिस भी बहुत अच्छी है

लेथोनिया से मानीफ़ा मिस्कीनी अने साहिबा ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा कि जलसे में शामिल होने से पहले इस्लाम के बारे में दुविधा में थी क्योंकि कुछ मुसलमान निहायत ही ग़ुस्सा वाले और दूसरे धर्मों के बारे में असहनशीलता का शिकार होते हैं लेकिन जलसे में शामिल होने के बाद मुझे अंदाज़ा हुआ है कि अहमदी मुसलमान दूसरों की राय और मज़हब का सम्मान करने वाले और समस्त इन्सानियत में अमन और मुहब्बत बांटने वाले लोग हैं। महोदया कहती हैं इस्लाम के बारे में बहुत कुछ नया सीखने को मिला। सब लोग मुहब्बत करने वाले और ख़िदमत के लिए तय्यार रहने वाले हैं। ख़लीफ़ा साहिब की सकारात्मक सोच मेरे ज़हन पर नक़्श हो गई है। उनके सवालों के दिए गए जवाब बहुत विस्तृत और हर किसी को आसानी से समझ में आने वाले थे। हुज़ूर का अमन का पैग़ाम बहुत प्रभावित करने वाला है। और मुझे बहुत ख़ुशी है कि मुझे हुज़ूर के साथ तस्वीर बनवाने की सौभाग्य मिली

लेथोनिया से गेना पॉवलावसकी अने साहिबा ने कहा :इस्लाम के बारे में इल्म में इज़ाफ़ा हुआ। क़ुरआन की तिलावत सुनकर बहुत मज़ा आया। ख़लीफ़ा साहिब के जवाब बहुत तफ़सील पर आधारित और थे।

मारिया क़ोमया गो साहिबा ने कहा कि जलसा में मुसलमानों की एक बहुत बड़ी संख्या से मिलने का अवसर मिलता है जो अमन की शिक्षा फैलाना चाहते हैं। इस्लाम की शिक्षाओं के हवाले से विभिन्न विषयों पर बहुत कुछ सीखने को मिला। जलसा के दौरान हर तरफ़ मुस्कुराते चेहरे बहुत प्रभावित करते हैं। ख़लीफ़ा साहिब बहुत इल्मी शख़्सियत हैं और कमाल की मज़ाक़ की हिस रखते हैं

(शेष.....)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad